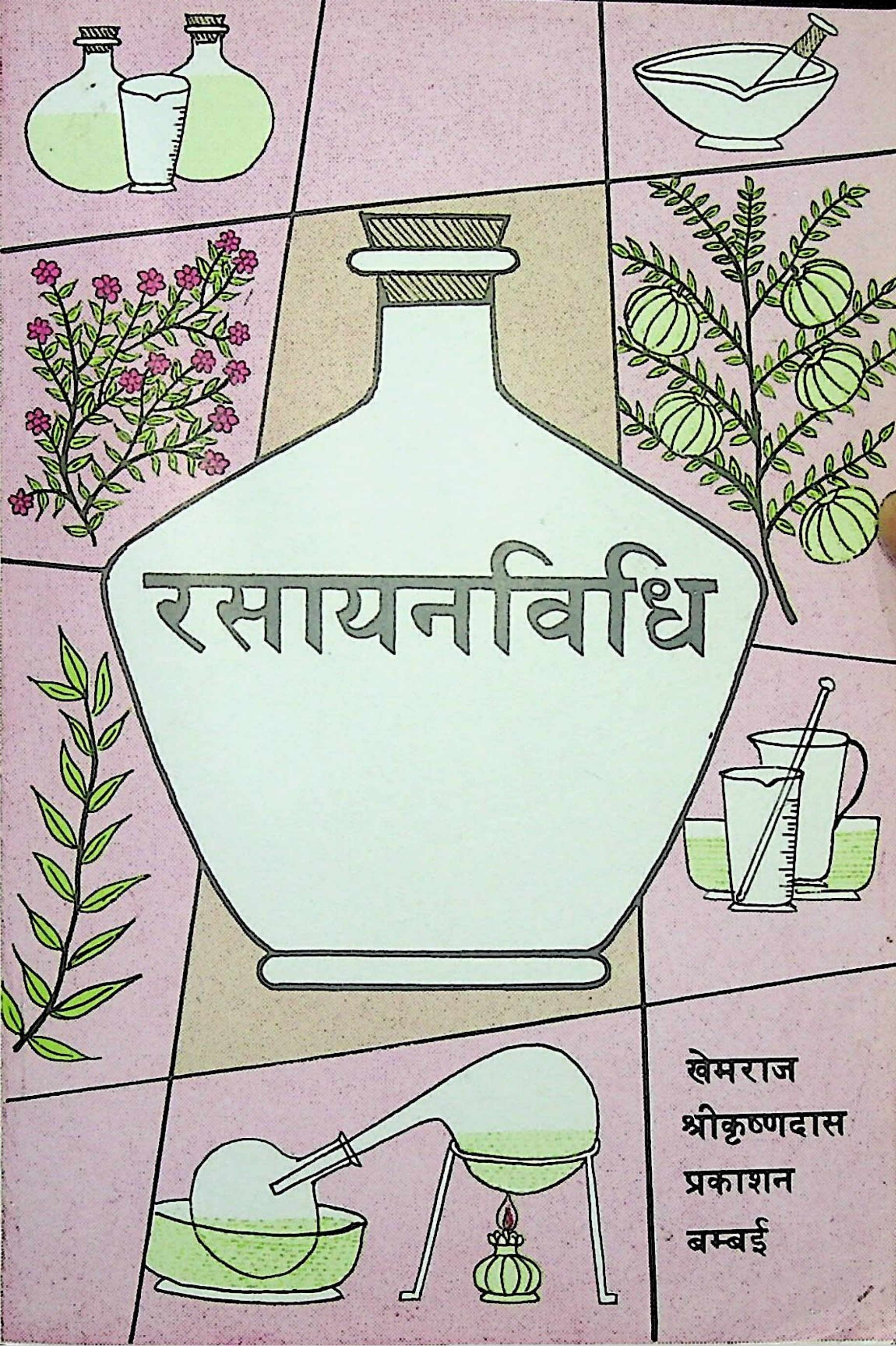

रसायनविधि

खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई

रसायनविधि

श्री. वैद्यशास्त्री पण्डित गौरीशंकरजी त्रिपाठी
ठाठिया निवासी (रायपुर)
द्वारा संग्रहीत

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : मार्च २०१७ संवत् २०७३

मूल्य : ९० रुपये मात्र ।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

अथ रसायनविधि

सूजन की दवा

अरनीखार ६ तोला, चिरचिरा खार ६ तोला, कलौंजी २ तोला, पीपरि छोटी २ तोला, यह सब पीस छानकर गाय के मूत्र से ७ दिन तक एक एक माशा पीवे तो सर्व प्रकार की सूजन दूर होवे।

कान बहने की दवा

फिटकरी की खील कान में डाले। अगर कुछ दर्द होने लगे तो थोड़ा से घी कान में डाल देवे, इस दवा से बीस वर्ष का भी कान बहता हुआ उसी वक्त आराम होवे।

अपरस की दवा

कुचिला, आक के जड़ की बकली, लहसन यह तीनों सम भाग लेकर अलसी के चौगुने तेल में जला देवे, फिर वह तेल प्रतिदिन रात को लगावे परन्तु प्रथम साबुन से अपरस को खूब धो लिया करे तब लगावे तो बीस वर्ष का भी अपरस एक महीने में अवश्य ही अच्छा होवे।

मनचीता जुल्लाब

जमालगोटे की जड़, तिधारा, जमालगोटा, यह सब एक एक तोला और हर्र ३ तोला लेवे, फिर सबका चूरन कर नींबू के रस में ४ पहर खरल करके माशा माशा भर की गोली बाँधे, फिर शीतल जल से १ गोली खावे, ऊपर से जितने चुल्लू ठंडा पानी पीवे उतने ही दस्त होवें जब बन्द किया चाहे तब गरम पानी पीवे।

दस्त होने की दवा

साबुन, नमक, घी यह सब बराबर लेकर पीसकर, नाभि के नीचे तथा उदर पर लेप करे, अथवा इसकी सुपारी समान गोली बनाकर गुदा में रखे तो उसी वक्त दस्त होवें।

शिर दर्द की दवा

खोवा आधा पाव माथे में बाँधे और छांह में बैठा रहे तो ७ दिन में हर प्रकार का शिरदर्द चाहे दश वर्ष का क्यों न हो अवश्य ही अच्छा होवे।

ताप तिजारी की दवा

सफेद मूसरी दो तोला, नमक सेंधा माशा ९, नीलकण्ठी माशा ९, ये सब चूरन बनाकर माशा ४ खावे तो ९ दिन में ताप तिजारी दूर होवे।

सनाय के गुण

सनाय को गाय की नैनू से खाय तो खूनी बवासीर मिटे। खीरा के बीज के साथ खाय तो पथरी गल जावे।

और पेट की पीड़ा दूर होवे। सहत से खाय तो ताकत आवे, गरमी मिटे। गुड से खाय तो चित्त शांत होवे,बल बढ़े। पांच बरस के पुराने गुड़ से खाय तो हमेशा ताजा रहे। मिश्री से खाय तो बल बढ़े, नेत्रों में ज्योति बढ़े। नेगड़ से खाय तो काया कल्प होवे, मल साफ होवे, उदर व्याधि मिटे, घमिरा के साथ खाय तो काया कल्प होवे। आमला से खाय तो पुष्ट होवे। अदरख के रस से खाय तो पेटशूल मिटे, नींबू के रस से खाय तो पेट की किलकिली मिटे, स्त्री खावे तो पुष्पवती होवे। गुलकन्द से खाय तो मुख की सर्दी मिटे, पुरुषार्थ आवे। बासी पानी से खाय तो नेत्रों की दाह मिटे, ज्योति बढ़े। हर्र और सोंठि के साथ खाय तो बाउट, वातरक्त, कछुई आराम होवे। गाय के मट्ठा से खाय तो सर्व उदर रोग मिटें। गाय के दूध से खाय तो पुष्टि बहुत करे, शरीर का रंग लाल करे। बकरी के दूध से खाय तो बहुत बल बढ़े। छुहारे से खाय तो मुख दुर्गन्ध मिटे, भूख बहुत बढ़े। अनारदाना से खाय तो कफ व खाँसी जाय। खुराक इसकी माशा ४ से ९ तक है। इति सनाय के गुण।

मूत्रबन्ध की दवा

मिलमिली के बीज मट्ठा में बांटकर बस्तिस्थान पर लेप करे तो बन्द मूत्र तुरन्त ही खुले।

मिरगी की दवा

बीरबहूटी, हाथी का मल, हल्दी इनको पीस कर

नाश लेय तो मिरगी का कीड़ा गिर पड़े तथा कुछ पुण्य करे।

पेट की लाग पर

ऊंट कटारे की जड़ ६ माशा, सांठी के चावलों के पानी में पीसकर पीवे तो पेट की छाल पच जावे। अगर एक वर्ष का रोग होवे तो १४ दिन और २ वर्ष का रोग होय तो २१ दिन पीवे।

वातविकार व डकार की दवा

भुने हुये कञ्जा की मींगी ६ माशा, सेंधा नमक ६ माशा। इन दोनों को मिलाकर खाय तो वातविकार व डकारों का आना दूर होवे।

रूपरस बनाने की विधि

शोधी हुई चांदी २ माशा, पठानी लोध १ माशा लेवे। प्रथम पठानी लोध को सफेद आक के दूध में पीसकर दो टिकिया बनावे फिर एक टिकिया ऊपर एक नीचे धरे। बीच में वह चांदी धरे फिर एक छोटा सा गढ़ा खोदकर उसमें सौ छेना भरे, बीच में वह टिकिया धरे, फिर दरूद पढ़कर आँच देय। ४ पहर तक फिर ठंडा होने पर निकाले तो चांदी की भस्म होवे।

मंत्रस्थान बाँधने का

ॐ नमो आदेश गुरू को चीज हाँड़ी में रखकर दिग्बन्धन कर पीछे यह मंत्र जप पढ़े।

मन्त्र–जल्ल तू जलाल तू कुदरते कमाल तू सख्त

वक्त का यार तू मेरा मुद्दआला तू मैं हूं गुरु की पावनी जहां जहां मेरा गुरु फिरे वा नावा करूं काव कौसर मतलूब हो बल मकसूद मौज़ूद हो। चूने की कली का नुस्खा सफेद मंदार के फूल की तरकीब लिखी है, उसी मुताबिक करना और वह दोनों मन्त्र पढ़ना।

नुसखा कुब्वत वाह

संखिया ३ मासा लेकर थोड़े से पानी में खूब बारीक पीस कर मुरगी के एक अंडे के ऊपर लेप करे, फिर घाम में सुखाकर उस पर पान लपेट कर ऊपर से कपड़ा लपेटकर उस पर डोरा लपेट देवे जिससे कपड़ा खुल न जावे, फिर एक मिट्टी की हाँड़ी में दो सेर पानी डालकर आग पर रखकर खूब खौलावे। जब खूब खौलने लगे तब वह पोटली उसी पानी में डाल देवे फिर दो घंटे बाद निकालकर ठंडा करके अंडे का छिलका छीलकर फेंक देवे, फिर अन्दर की सफेदी व जरदी एक में मिलाकर सात गोली बनावे फिर कटोरी में रखकर ऊपर से इतना घी डाले कि गोलियां डूबी रहें फिर १ गोली निहार मुँह खाकर ऊपर से एक छटाँक घी पीवे तो ७ दिन में धातु अत्यन्त बढ़े। नपुंसकपना दूर हो, पुरुषार्थ अत्यन्त बढ़े।

क्षयी की दवा

इन्द्रयव २ तोला पानी में भिगोकर भूसी निकाल देवे, फिर दही की आंठी में खरल करे और एक वक्त

खिलावे फिर पुराना सन का टाट २ तोला बारीक कूटकर दो गोला बारीक कूट लेवे, काली मिर्च २ तोले, आमा हल्दी २ तोले, पुराना गुड़ पावभर, घी आधासेर कढ़ाई में डालकर गर्म करे फिर उसी में सब चीजें बारीक पीस कर भून लेवे, फिर शहद डालकर उतार कर रख लेवे। फिर दोनों वक्त एक एक तोला खावे तो क्षय रोग अवश्य ही दूर होवे। पथ्य दाल भात खावे।

चौकी हनुमन्त की

हनुमन्त बसैं हथेली, भैरों बसें ललाट, नरसिंह की मोहनी बांध मसाने डार पूजा करौं, जालपाकी मनमाने तहँ जाऊं, वरुणा सानू वरुआ बांधूं वरुवा वाकर खाऊं, इतनी आन हनुमन्त की जहां चेतूं तहां जाऊं, धुरिया लेटन धुरिया पेटन धुरिया का सिरहाना राम लछिमन दोऊ भुज पर बैठे, महाबीर रखवारा महाबीर की चौकी वज्र का सोंटा अब क्या वन में रहता है श्रीपुरीनारायण का सिंहासन यह क्रिया चौगिर्दा घेरी गुरू के वचन रहे रखवारी लोहे का कोट तांबे की वाड़ी महावीर की चौकी नरसिंह रखवारी।

विषनाशन मंत्र

ॐ विषकी भरनी विष भरूं कि विष की कली चबाऊं तामें डारके डंक लायों डंक उठा गहराय अरडे का मत कर, संखा हनुमान भारी लंका लंका मार मूरिका धाये अबकी बेर जाग हो संभार के डंषा।

अन्य मन्त्र

ॐ रहमत अली पीसे कूटे ताव चले लकरीनकूं पर भान चले पानीकूँ ताव देख धरती अकुलानी अर्जुन कूटा भैंसा करिया सारे येह विष कैसा अबकी बेर जाग हो संभार के डंषा ।। ॐ हाथ लुहांगी टेके डांग सांवल वीर बहावे मंगल काया अब क्या चेतो निरपत बान ये तो अहैं ईश्वरी बान दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की मेरे झाड़े विष निर्विघ्न हो जाय।

पागल कुत्ता काटे की दवा

सेमर की रुई मंदार के दूध में भिगोकर काटे स्थान पर लगा देवे तो बावले कुत्ते का विष नाश होवे परन्तु थोड़ा सा गुड़ में मिलाकर खिला भी देवे।

हड़ताल भस्म की विधि (सोना बने)

तांबे की घरिया बनावे उसमें श्यामा तुलसी पत्र का चूरन भरे बीच में तवकिया हरताल धरे, फिर घरिया बंद कर देवे फिर छेना की आंच दो पहर तक देवे जब भस्म हो जाय तब उतार लेवे और शीशी में भर लेवे और ५२ तोला तांबा गलाकर पाव रत्ती उक्त खाक उसमें डारे तो मनोरथ सिद्ध होवे चोखा सोना बने।

सोना बनाने का दूसरा प्रकार

भौंर मार बूटी का पञ्चांग लेवे और बांटकर रस निकाले फिर चोखा तांबा तोला १ गलाकर उसमें सुहागा माशा १ डाले जब तांबा गल जावे तब उक्त रस

डाले जब औटकर रंग जल जावे तब निकाले तो सोना होवे।

रूपा बनाने की रीति

संखिया माशा ६ लेकर सूरनकन्द में छेदकर उसके भीतर रख देवे और सूरन की लुगदी से बंदकर देवे, फिर उस पर तीन कपरौटी करके आग में भस्म कर देवे ठंडा होने पर निकाल कर तांबा तोला १ गलाकर उसमें ६ रत्ती सुहागा डाले जब ताँबा गल जावे तब उसमें १ माशा उक्त संखिया की भस्म डाले तो मनोरथ सिद्ध होवे चोखी चांदी बने।

सोना बनाने का तीसरा प्रकार

तांबा २ तोला लेकर घरिया में धरे, उसमें २ माशा सुहागा डालकर गलावे, जब गलकर पानी हो जावे तब सहदेई का स्वरस और चीते का स्वरस और नींबू का स्वरस डाल डालकर आंच देवे तो सोना बने।

अन्य विधि

तांबे के पत्र पतले कागज के समान बनावे फिर गर्म कर २१ बार मही में बुझावे फिर किरकिरा से ३ बार मांजकर धोवे फिर लियाकन्द २ तोला लेकर पानी में बाँटकर मिट्टी के डबला में रखकर औटावे औटाते समय उसमें जो फेना उठे उसको निकाल कर कांसेके पात्र में धरे.फिर तांबे के पत्रों पर वह फेना चुपड़कर घाम में सुखा लेवे फिर वही तांबे के पत्र सुहागा देकर

गलावे तो चोखा सोना बने।

संखिया भस्म से सोना बनाना

१२ तोला संखिया एक थैली में रखकर गाय के एक सेर दूध में डालकर औटावे जब सब दूध जल जावे तब वह थैली निकाल कर पीसकर गोली करे फिर दो सरवों में बन्द करके उस पर कपरौटी करके एक गढ़ा खोदकर उसमें ५ सेर छेना की आंच देवे इसी प्रकार ४० पुट देवे फिर निकाल कर तांबे की डिबिया में धरे ऊपर से घीकुआर का स्वरस भर देवे और डिबिया को ढक्कन से बन्दकर देवे उस पर ७ कपरौटी करके गजपुट में फूँक देवे ४ पहर तक बराबर आंच देवे तो संखिया भस्म होवे तांबा तोला १ गलाकर उसमें माशा १ उक्त भस्म डाले तो चोखा सोना बने।

चांदी बनाना

एक सीझे हुये मटके में १० सेर कली चूना भर देवे और सवासेर राँगा को गलाकर उसकी रोटी सी बनाकर उसी चूना के बीच में रख देवे ऊपर से सेंधी अथवा ताड़ी ३ सेर भर देवे फिर भट्टी पर चढ़ाकर ४ प्रहर की तेज आँच देवे ठंडा होने पर निकाले तो चोखी चांदी बने।

नुस्खा चांदी व सोना (संखिया भस्म) से

एक तोला संखिया एक सरई में परवी के दिन धरे उस पर २१ बार पेशाब करे परंतु हर बार घाम मे

सुखा लिया करे फिर एक गढ़ा खोदकर उसमें अरने छेना भरे बीच में उक्त सरई धर के आग लगा देवे फिर स्वांग शीतल होने पर निकालकर रख छोड़े फिर १ तोला राँगा गलाकर उसमें १ माशा डाले तो चोखी चांदी बने अगर तांबे में डाले तो सोना बने।

अन्य विधि

भैंसा के गोबर में संखिया धर के २१ पुट देवे फिर राँगा तोला ५ में उक्त संखिया माशा ६ डाले तो चोखी चांदी बने।

नुस्खा सोना व चांदी

काली हल्दी को बाँटकर एक सरई में धरे, ऊपर से चना की खारी निचोड़कर भरे एक सींका बनाकर घाम में वह सरई धरे जब रस सूख जावे तब गजपुट में फूंक देवे फिर निकाल कर तांबा १ तोला गलाकर उसमें १ मासा डाले तो सोना बने अगर राँगा में डाले तो चांदी बने।

अन्य विधि

पारा तोला १, सुहागा तोला १, सीसा तोला १, मैनशिल तोला १ इनको तुलसी के रस में १ प्रहर तक खरल करे फिर घरिया में रखकर १ पहर तक दीपक की ज्योति समान आंच देवे फिर तांबे को घरिया में रखकर नीचे ऊपर उक्त औषधी रखकर फूके तो सोना बने।

पारे की गोली

पड़रुखा की जड़ के रस में पारे को घोटै तो गोली बँधे।

ताम्र भस्म

तांबे को बारीक रेतकर समुन्दर सोख के पत्तों के रस में ३ दिन तक खूब घोटै फिर गजपुट में भस्म करे तो ताम्रेश्वर बने।

पारा सिद्ध करना

एक मिट्टी की हांड़ी में आधा सेर नमक रखे उसके ऊपर दो तोला पारा धरे फिर कपरौटी करके हांड़ी पर हांड़ी रखकर दोनों हांड़ियों का मुख खूब घिसकर मिला देवे फिर मुद्रा देकर पीपल की लकड़ी की दो पहर तक आंच देवे तो पारा सिद्ध होवे।

वंग भस्म

छोटी दूधी के दूध में राँगा के पत्र चुपड़कर अमिली या बेर की लकड़ी की दो पहर तक आंच दे तो वंग भस्म होवे।

सोना बनाना

तांबे के पतले पत्र गरम करके २१ बार मही में बुझावे फिर ३ बार किरकिरा से मांजकर धोवे फिर हरदिया जहर को पानी में बाँटकर एक सरई में रखकर आग में चुरावे जब उसमें फेना उठे तब वह फेना उतार कर दूसरे बर्तन में रखता जावे, फिर वही

फेना तांबे के उक्त पत्रों पर चुपड़कर सुखा लेवे जब सूख जावे तब वही पत्रा सुहागा देकर गला लेवे तो सोना बने।

अन्य विधि

तांबा तोला १, सुहागा माशा १, पारा रत्ती २ इन सबको एक में डालकर गलावे जब गल जावे तब भौंरमार बूटी का रंग डाले तो सोना होवे।

अन्य विधि

तांबे के पतले पत्र गर्मकर नमक के पानी में ७ बार बुझावे फिर नमक के पानी में डालकर ४ घड़ी तक चुरावे जब काला हो जावे तब घरिया में रखकर १ तोला में १ माशा सुहागा डाले फिर निर्गुंडी के रस की ७ पुट देवे तो सोना बने।

अन्य विधि

हरताल २ तोला, गन्धक २ तोला इन दोनों को पान के रस में ४ पहर खरल करे फिर आतशी शीशी में भरकर ७ कपरौटी करके सुखा लेवे फिर बालुका यंत्र में रखकर सिद्ध करे फिर ५२ तोला तांबा गलाकर उसमें २ रत्ती डाले तो सोना बने।

पारा सिद्ध करना

पारा ५ पैसा भर, भिलावां १ सेर १ मिट्टी की हांड़ी में चढ़ावे और ८ पहर की आंच देवे दीपक की ज्योति

उसमें १ रत्ती डाले तो सोना बने और राँगा १ सेर गलाकर उसमें १ रत्ती डाले तो चांदी बने।

पारा भस्म से सोना बनाना

पारा १ तोला नकछिकनी के रस में ४ पहर तक खरल करे, जब गोली बँधने लगे तब चोखे जस्ता की कटोरी दो तोला की बनावे और एक पुरानी ईंट लाकर उसमें गढ़ा करे गढ़ा में कटोरी धर और कटोरी में वही गोली धरे और चूल्हे पर चढ़ाकर पलाश की लकड़ी की चार पहर आंच देवे और घीगुआर का रस बारंबार कटोरी में चुवाता जावे जब डिबिया बैठ जावे तब उतार लेवे और तांबे के पतले पत्र बनाकर व तेल व मट्ठा व गोमूत्र व हल्दी के पानी में क्रमशः गर्म करकर इक्कीस इक्कीस बार बुझावे फिर १ तोला गलाकर उसमें १ चावल डालो तो चोखा सोना बने।

अन्य विधि

पारा तोला ५ लेकर तुलसी के रस में खरल करे, जब गोली बँध जावे तब ५ तोले जस्ता की एक कटोरी बनाकर उसी में उक्त गोली रखकर मुद्रा करे और सुखावे, फिर एक कड़ाही में आधा सेर खार भरकर उसी के बीच में वह कटोरी दबा देवे फिर

डाले तो चांदी बने।

चांदी बनाना

एक सेर चोखे राँगे के पत्र बनाकर १ हांड़ी में धरे फिर उसमें नकछिकनी का रस १ सेर और भिलावां का रस १ सेर और अमरबेल का रस १ सेर डालकर हांड़ी का मुख बन्द करके चूल्हे पर चढ़ाकर जंगली छेना की ४ पहर तक आंच देवे तो चोखी चांदी बने।

सुवर्ण भस्म

एक मोहर लेकर ७ बार सज्जी के पानी ७ बार मैनहर के पानी में ७ बार संखिया के पानी में ७ बार हरताल के पानी में गरम करकर बुझावे फिर मंदार की जड़ का चूरन बनाकर एक सरई में एक छटाक चूरन धरे बीच में उक्त मोहर रखकर ऊपर से दूसरी सरई में ढककर सम्पुट करके गजपुट में फूँक देवे तो मोहर भस्म होवे।

पारा भस्म से सोना बनाना

पारा २ तोला लेकर घीगुआर के रस में दो दिन तक खरल करे फिर नकछिकनी के रस में २ दिन खरल करे फिर घमरा के रस में २ दिन खरल करके सुखाकर आतशी शीशी में रखकर बालुका यंत्र में १६ पहर की आंच देवे जब दो दिन पीछे स्वांग शीतल होय तब निकाल कर रख छोड़े फिर तांबा तोला १ गलाकर १ रत्ती डाले तो सोना बने।

अन्य विधि

रुद्रवन्ती (वन चना) का अर्क और ऊंट कटारे का अर्क इन दोनों अर्कों में चार तोला पारा को एक एक पहर तक खूब खरल करे तब तांबा, रांगा, लोहा, जस्ता वगैरह आठों धातुओं को बांधे। बावन तोला में दो रत्ती राँगा में डाले तो चांदी, अन्य धातु में डाले तो सोना बने।

सोना बनाना

तोरस गन्धक, मोरस पारा, बीच बीच देय नाग सितारा अर्क दूध में दीजे जार आसक्ता की कर लीजे छार लै शीशे में डारे कोई पर्वत समान कञ्चन होई।

पारा भस्म से सोना बने

पारा १ तोला में आम का तोर १ तोला डाल कर खूब खरल करे गोली बाँधे फिर सूरनकन्द कोलिकर उसी में गोली धरे और सूरन ही से बन्द करके कपरौटी करके गजपुट में फूँक देवे स्वांग शीतल होने पर निकाल कर रख छोड़े फिर तांबा गलाकर डाले तो सोना बने।

ताम्र भस्म

राम सरसों के तेल में हरताल घोटे फिर तांबे के पतले पत्र बनाकर उन पर लेप करे फिर घरिया में धरकर अरने छेने की आंच से भस्म करे फिर निकाल कर रख छोड़े इस खाक से काम सिद्ध होवें।

संखिया को सेहुंड़ा के दूध या रस में खरल करे १ पहर तक, फिर सुखाकर आतिशी शीशी में रखकर बालुका यंत्र से सिद्ध करे तो संखिया भस्म होवे इस भस्म से सोना बने।

ताम्र भस्म

कुकुरौंधे के पत्ते बाँटकर लुगदी करे बीच में तांबा रखे फिर कपरौटी कर गजपुट में फूँके तो तांबा भस्म होवे।

पारा भस्म

ककोड़ा की जड़ मुख में चाबकर हाथ में पारा रखकर उस पर थूके फिर अँगूठे से मले तो पारा खाक होवे।

अन्य विधि

पारा को सगोनियां के पत्तों के रस में १६ पहर खरल करे फिर तांबा के पतले पत्र बनाकर उन पर चुपड़ देवे फिर आग में रखकर गलावे तो सोना बने।

चांदी बनाना

ताम्र भस्म से पारा बँध जाता है पहिले एक कटोरी में पारा धरे उस पर छोटी दूधिया का रस निचोड़े फिर उसमें तामेश्वर डालकर आग देवे तो पारा बँध जावे अर्थात् सख्त (चांदी) हो जावे।

पारा भस्म से चांदी बनाना

पारा ५ तोला हरताल ५ तोला लेकर ६३ नींबू के स में १ पहर तक खरल करे फिर वार फाटा के १ ोला रस में १ पहर खरल करे फिर सुखाकर आतिशी ीशी में रखकर ७ कपरौटी चिकनी मिट्टी की करे फिर ुखाकर गजपुट में फूँक देवे १२ पहर आंच देवे काल ैरव की स्थापना करे सवासेर चूरमा चढ़ावे और काले ुत्ते को खवावे फिर स्वांग शीतल होने पर निकाले वही सली खाक है पांच सेर रांगा गलाकर दो पैसे भर उक्त ाक डाले तो चोखी चांदी बने।

नुस्खा सोना व चांदी

पैगम्बरी नौसादर १ पैसे भर काटे गन्धक माशा ६, ांच की चूड़ी माशा ६, तवकिया हरताल माशा ६, ोनामाखी माशा ६, शोरा कल्मी माशा ६, बच्छनाग ाशा ६, ये सब बस्तुयें लेकर चूरन करे और एक रिया में रख कर आग देवे तो भस्म होवे फिर िकालकर रख छोड़े रांगा गलाकर डाले तो चांदी बने ौर तांबे में डाले तो सोना बने।

पचरंग खाक से सोना व चांदी बनाना

१ तोला पीला संखिया, १ तोला कटि गंधक, १ ोला सिंगरफ, १ तोला कैरी नख, पुमान रुवैगज भरे न ७ लेप करके कपरौटी करे, १० दिन राखे फिर ड़भूँजा के भाड़ की मिट्टी की घरिया बनावे उसमें

रखकर ७ पहर की खैर के कोयले की आंच देय फिर स्वांग शीतल होने पर निकाल कर रख छोड़े, इसको पचरंग खाक कहने ११ तोला तांबा गलाकर उसमें तीन रत्ती डाले तो सोना बने ११ तोला जस्ता या राँगा में डाले तो चांदी बने।

पारा भस्म से सोना बनाना

काले गदहे के ५ सेर मूत्र में ४ तोला पारा डालकर एक हांड़ी में रखकर ६ महीने तक धरती में गाड़ देवे ऊपर से घोड़े की लीद डाल देवे बाद ६ मास के निकाल कर रख छोड़ै तो ५२ तोला को पाव रत्ती बेधे।

गरमी प्रमेह सुजाक की दवा

सफेद पांगरा की छाल लेकर पीसकर माशा १ या २ सफेद जीरा और शक्कर में मिलाकर खावे तो गर्मी, प्रमेह, सुजाक, मूत्रप्रवाह सब नाश होवें। पथ्य शक्कर, घी, भात, खावे नमक, खटाई, तेल, मिर्चा, हींग, चना ये सब न खावे दवा खाने पर उतार अजवाइन, सिकाकाई, बारीक पीसकर मालिश कर स्नान करे तो अच्छा होवे।

ढोरों की दवा

काले साँप की केंचुली माशा ३ गूगुल माशा ६, इन दोनों को आधे नींबू में रखकर आटा से लपेटकर भुलभुल आग में पकाकर ढोर को खवावे तो माताखुरी की बीमारी आराम होवे अगर पेश्तर खिलावे तो

बीमारी पास न आवे।

वन्ध्या गाय की दवा

केले का १ फूल आटा में लपेटकर गाय को खवावे तो बन्ध्या गाय अवश्य ही गाभिन हो जावे।

हाजरात

एक एक गेहूँ पर २१ बार यह आयत पढ़कर ७ बरस के लड़के को २१ गेहूँ खिलावे फिर जो चाहे सो पूँछे आयत-सलामुन कौलुन वेर छे रहीम।

बवासीर की दवा

इन्द्रयव बारीक पीसकर कपड़ छानकर माशा ६ मट्ठा के साथ खावे तो ४० दिन में बवासीर जड़ से आराम होवे।

अन्य दवा

ऊंट कटारे की पत्ती के रस में रसौंत को खूब घोटकर छोटी सुपारी समान गोली बनाकर दोनों वक्त खाय तो बवासीर आराम होवे।

बादी बवासीर की दवा

कायफल १ तोला, पुराना गुड़ १ तोला, घी १ तोला, १ तोला कायफल को पीस छान कर हलुवा बनावे ३ गोली बाँधे तीनों गोली दिन भर में खा लेवें परंतु दांत न लगने पावें तो बादी बवासीर ७ दिन में दूर होवे।

बन्धेज पर पारे की गोली

सत्यानाशी कटेरी के रस में पारा को खूब रगड़ कर

गोली बांध लेवे वक्त जरूरत पर मुख में रखे तो बन्धेज होवे।

कष्टी स्त्री का उपाय

एक कागज पर यह दुआ लिखकर रेशम के धागा में बांधकर लोबान की धूनी देकर कमर में बांधे तो कष्टी स्त्री की सारी तकलीफ उसी वक्त दूर होवे और सुखपूर्वक बच्चा पैदा होवे तब तुरंत उक्त ताबीज कमर से खोलकर फेंक देवे देरी न करे नहीं तो आँतें भी गिर पड़ेंगी। दुआ यह है।

والسكول .والسكول-ولاحول ولاقوت الهءبالهءالعلي العظيم

अलस्कूल वो अलस्कूल व लाहौलवला कूअत इल्ला विल्ला हिल अली युल अजीम् ।

गर्भाधान का उपाय

इमाम नातिक जाफर सादिक से रवायत है कि, जो औरत सूरे हन्न को केशर से लिखकर अपने पास रखे जल्द हामिला होगी और जिस दरख्त में बाँधे बहुत जल्द फल आवें हर नौचन्दी जुमेरात को लोंबान देवे।

هو هو هو هو هو هو هو ه	हू
الله الله الله الله الله الله ال	अल्लाह
حی حی حی حی حی حی حی	हैयु.
قیوم قیوم قیوم قیوم قیوم قیوم قیوم قیو	कैयूम
صلی الله تعلی علی خیر خلـ	सल्लल्लाहो तआला
محمد واله واصحابه اجمعین	आला खैर खलकही

हम्मद्यूं व आलही व असहावही अजमाइन।

स्त्री वशीकरण

रविवार या मंगलवार को अंजीर की लकड़ी लाकर त्ती को मारे फिर लकड़ी जलाकर खाक करे फिर ज मूत्र में उस खाक की गोली बांधे फिर रविवार या गल को जिस स्त्री के वह गोली मारे वह स्त्री अपने श होवे।

दमा व खाँसी की दवा

हरताल तवकिया एत आतशी शीशी में रखकर परौटी करे फिर आग में रखे जब धुआँ निकलना बन्द जावे तब निकाल लेवे फिर बँगला पान और अदरख अर्क से रत्ती दो खावे तो कफ, खांसी, दमा दूर वे।

चांदी बनाना

एक हांड़ी में पहिले तीन सेर कली का चूना धरै

उसके ऊपर ४ तोला सफेद मदार के फूल धरे फिर उस पर दो तोला राँगा की रोटी बनाकर धरे फिर उस पर ४ तोला मदार के फूल धरै फिर उस पर ३ सेर चूना धरे फिर उस पर सेंधी या ताड़ी दो सेर डालकर ४ पहर की आँच देवे तो चांदी बने परंतु पहिले रांगे को नीम के रस में ७ बार बुझा लेवे।

मल्हम

राल २ तोला, कवीला २ तोला, सफेदा काश्गरी तोला १, सिन्दूर माशा ६ गाय का घी १ छटांक, पहिले घी को १०१ बार पानी से धो लेवे फिर आग पर चढ़ाकर गर्म करे जब घी पिघल जावे तब पहिले कवीला पीसकर डाले और लकड़ी से चलाता जावे फिर राल फिर सफेदा फिर सिन्दूर (बन्दन) डाले और खूब मिला देवे इसके लगाने से सर्व प्रकार के घाव अति-शीघ्र अवश्य ही नाश होवें।

नासूर का मल्हम

सफेद घुँघची ३ कुत्ते की लार में घिसकर एक कपड़े की बत्ती बनाकर उसी पर चुपड़ देवे फिर नासूर में वह बत्ती घुसेड़ देवे तो नासूर भर जावे इस बत्ती से बिन्दु कुशाद भी आराम हो जावे।

अन्य दवा

जमाल गोटे को भैंसा के गोबर में पकाकर छील डाले फिर १ तोला हीरा हींग और १ तोला उक्त

जमालगोटा लेकर दोनों को १० तोले अदरख के रस में खरल कर चना बराबर गोली बना रखे फिर जरूरत पर एक गोली पानी या थूक में घिसकर लिंग पर लेप करे तो नपुंसकता दूर होवे।

जुल्लाब

सड़ी सुपारी ५ तोला, बबूल की कोंपल ५ तोला, इन दोनों को सवासेर पानी में काढ़ा करे जब तीन छटांक बाकी रहे तब छानकर दो तोला मिश्री डालकर पीवे तो जुल्लाब लगे।

पारा की गोली बनाना

पारा १० तोला लेकर रामपत्री के रस १० तोला में खूब खरल करे जब गाढ़ा हो जावे तब मूँग की दाल में डालकर पकावे तो पारा कठोर हो जावेगा।

दस्तावर चूरण

सौंफ १ तोला, अजवाइन १।। तोला, काला नमक १ तोला, छोटी हर्र १ तोला, सोंठि १ तोला, पीपरि छोटी १ तोला, सनाय ३ तोला लेवे फिर सबको महीन पीस छानकर माशा ६ खावे अगर कोठा कड़ा होवे तो माशा ९ खावे तो पाचन होवे दस्त साफ होवे।

स्तम्भन पर बूटी

सोमवार की शाम को चिरचिरे के दरख्त को पीले चावलों से न्योता दे आवें मंगल को सूर्योदय के पहिले नंगा होकर गूगल की धूनी देकर जड़ से उखाड़ लावे

फिर गूगुल देकर उसकी जड़ तांबे के ताबीज में भरक राखे फिर कमर में पीछे ताबीज बांधे तो स्वतन्त्र बंधे होवे जब ताबीज को आगे तोंदी के नीचे लावे त खल्लास होवे।

तिजारी पर बूटी

उक्त प्रकार से न्योतकर इतवार को छोटी दूधी की जड़ लाकर मर्द के दाहिने ओर स्त्री के बायें भुजा मे बांधे तो तिजारी मिटे।

बवासीर की दवा

जीती घोंघी लाकर आग में जलाकर कोयला करे फिर शराब में मिलाकर पीसकर रुपिया बराबर टिकिया बनावे फिर तमाखू के पत्ते पर वह टिकिया रखकर सेन्दुर (बन्दन) का टीका लगाकर बवासीर के मस्सों पर वह टिकिया बांधे तो ७ दिन में बवासीर के मस्से गिर जावें।

पेट के शूल की दवा

लाल गमीले का रस निकाल कर सांभर नमक मिला लेवे, फिर दर्द की जगह पेट पर लेप करे, जब सूख जावे तब फिर लेप करे, ऐसे ही ३ बार करे और फिर आग से सेंके तो उसी वक्त दर्द दूर होवे। अगर कमर में दर्द होवे तो सफेद गमीले का रस उक्त विधि से

वायगोले की दवा

कांटेदार थूहर से पेट पर चार पांच जगह आंके और उस जगह पर ईंट का बारीक चूरण बुरक देवे तो वायगोले का दर्द सदा के लिये नाश होवे परंतु जहां पर बायगोला हो वहीं पर आंके।

पाचन चूरन

सोंठि २ तोला, सौंफ २ तोला, अजवाइन २ तोला, मिर्च २ तोला, पीपरि १ तोला, सांभर नोन २ तोला, काला नोन २ तोला, सूखा पोदीना २ तोला, दालचीनी २ तोला, सुहागा २ तोला, नौसादर २ तोला इन सबको पीस छानकर चूरन करे फिर भोजन करने के बाद माशा १ खावे तो क्षुधा बढ़े अन्न पचै दस्त साफ होवे।

बहिरेपन पर तेल

बादाम की मींगी तोला १, कड़वी तोंबी की मींगी १ तोला, तज १० तोला अदरख २० तोला इन सबको पानी में बांटकर तिल के आधा सेर तेल में पचाकर मन्दाग्नि से तेल सिद्ध करे फिर शीशी में भरकर रख छोड़े फिर थोड़ा सा तेल गुनगुना करके कान में डाले तो बहिरापन दूर हो।

सुजाक की दवा

मखाने २ तोला, धान की लाई ४ तोला, गिलोय

पानी में भिगो देवे रात भर भीगने पर सबेरे मलकर छानकर तीन बार में सब पी जावे और दूध भात का भोजन करे तो पुराने से पुराना भी सुजाक अति शीघ्र आराम होवे यह नुस्खा प्रसिद्ध हकीम विलायत हुसेन का मुजर्रिब है।

शिर दर्द पर अमल

जब शिर दर्द का रोगी आवे तब उससे कहे कि दर्द की जगह हाथ से पकड़ो फिर धरती पर अलग अलग यह अमला लिखे।

नम्बर २	नम्बर १
والکفر باطل	الا سلام حقن

वल कुफरे वातिलुन्–अला सलाम हक्कुन फिर नम्बर दो पर तीन बार जूता मारे–परंतु नम्बर एक में न लगने पावै। अगर एक बार में दर्द दूर न हो तो तीन बार ऐसा ही करे तो जरूर ही दर्द बन्द होगा।

भगन्दर की दवा

मसूर की दाल आक के दूध में पीसकर लगावे तो भगन्दर आराम होवे परंतु यह दवा लगती बहुत है।

बवासीर की दवा

बवासीर के मस्मों में नीम का तेल लगावे और काले धतूरे के पञ्चांग को सुखाकर उसकी धुनी मस्मों में देवे तो मस्से अवश्य ही नाश होवें परंतु यह धुआँ आखों में

न लगने पावे दवा क्या अक्सीर है।

अन्य दवा

अंडी का तेल और हल्दी दोनों को खूब फेंट कर बवासीर के मस्सों में लगावे फिर बाजरी के आटा की धूनी लेवे तो बवासीर मिटे अक्सीर है।

अन्य दवा

सोंठि, मिर्च, पीपरि, खुरासानी, अजवाइन, रेवतचीनी ये सब सम भाग लेकर पीस छान कर दो दो माशे भर की शहद में गोली बांधे फिर १ गोली अपने ऊपर उतार कर फेंक देवे फिर खावे तो खूनी बवासीर दूर होवे।

पीनस पर बूटी

सूरजमुखी के पत्ते और फूल पीसकर चिलम में रखकर धुआँ पीवे और मुख और नाक से धुआँ निकाले तो पीनसके कीड़ा गिरते हैं।

स्त्री का दूध बढ़ाना

सौंफ आधी कच्ची आधी पक्की में बराबर भाग शक्कर मिलाकर तोला १ खाय तो स्त्री के दूध अधिक होवे।

दन्त रोग पर

पथरचटा की जड़ बालक के गले में बांधे तो दांत सुख से निकलें बालक को कोई कष्ट न होवे।

खुजली की दवा

करंज का तेल लगावे तो खुजली मिटे।

ताँबा की सफेद भस्म

गोरखगांजा, नकछिकनी, इन दोनों को सम भाग लेकर पीसकर गोला बनावे फिर उसके भीतर तांबे का पत्र रखे फिर पांच सेर जंगली छेना की आँच देवे तो ताँबा की सफेद खाक होवे।

चांदी बनाना

लज्जावन्ती और भूऔंड़ी (रायसेन) इन दोनों का रस निकाल कर राँगा गलाकर डाले तो चांदी होवे।

सोना बनाना

सिंगरफ तोला १ लेवे उसमें आधा तोला जस्ता मिलावे फिर जंगली भांटा में धरे फिर कपरौटी करके ४२ आँच देय तो खाक होवे फिर तांबा गलाकर उक्त खाक डाले तो तांबा सोना हो जावे।

अन्य विधि

संखिया, गन्धक, पारा ये तीनों सम भाग लेकर पीसकर शहद में गोली बांधे फिर सफेद मुर्गी के एक अण्डे में भरकर तीन कण्डे की आंच देय जब बोलना बन्द हो जाय तब उतार लेय फिर राँगा गलाकर डाले तो चांदी होवे और तांबा गलाकर डाले तो सोना होवे। अगर १ तोला पारा और दो माशे चांदी एक ही में रख कर गलाकर उसमें एक रत्ती उक्त खाक डालें तो उत्तम

चांदी बने।

पारा जमाना

पारा १ तोला सेनाटा, पोटास, संग वसरी, संग पशव, इन सबको लेवे पहिले एक घरिया में थोड़ा सा संगयशव पीसकर चुपड़ देवे फिर उसमें सेनाटा पोटास १ रत्ती भर एक तोला पारा के लिये डाले सेनाटा पोटास पारे का पानी खा जायगा और संगयशव उड़ने न देगा फिर १ तोला पारा में संगवसरी पिसी हुई १ रत्ती डाले तो पारा बैठ जायगा और बिलकुल आला दर्जे का सख्त सफेद पदार्थ बन जावेगा।

दिव्य दृष्टि

सुवा मछली को रामावन (नादन वन) की रुई में लपेटै और चमेली के तेल में रखकर काजल पाड़े फिर जो स्त्री पैर से जन्मी हो उस (पायल) की हथेली और हाथ के नाखूनों में लगावे तो दिव्य दृष्टि होवे तीनों लोक देखें यह सोने शाह फकीर का बताया हुआ लटका है।

गन्धक का तेल बनाना

करकनात मुरगी के अण्डे का मुख फोड़कर जरदी निकाल डाले फिर आमलासार गन्धक माशा ३ और हरताल तवकिया माशा ३ पीस कर उसी अण्डे में भर देवे आधी दूर तक फिर एक दूसरा अण्डा लेकर बीच से फोड़कर उसी अण्डे में पहिना देवे और पानी में रूमी

मस्तगी पीसकर अण्डे की सन्धि बन्द कर देवे ताकि भाफ बिलकुल बाहर न निकले, फिर लोहे के तारों का एक सींका बनावे उसी में उक्त अण्डे को रखकर दोला यंत्र की रीति से एक सरसों के तेल से भरी हुई छोटी हांड़ी में लटकावे और हांड़ी का मुख बन्द कर देवे और अण्डे को यत्न से भाफ से पका लेवे तेल पीला बीरबहूटी की रंगत का ऊपर आजायगा तलछट नीचे बैठ जावेगा फिर निकालकर रख छोड़े फिर तांबे पर सींक से यह तेल चुपड़कर गलावे तो सोना हो जावेगा, परमेश्वर का ऐश्वर्य है यह झांसीवाले सोने शाह फकीर का मुजर्रिब व मशहूर नुस्खा है उन्होंने अपनी खुशी से महाराज सिंह दारोगा को बता दिया था।

गर्भाधान का मंत्र व यंत्र विधि सहित

ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।।

(विधि)—पहले आगे लिखे हुए यन्त्र को अनार की क़लम से भोजपत्र पर सफेद चन्दन में हल्दी मिलाकर लिखे अथवा केशर से लिखे। प्रतिदिन चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से यन्त्र की पूजा करे फिर स्त्री व पुरुष दोनों ब्रह्मचर्य से रहें। दूध, घी, चावल, पूड़ी, मेवा, खीर, हलुवा खावें और मांस मछली, लहुसन, प्याज, मूली, बैंगन, तेल, खटाई न खावें और उक्त मन्त्र का एक लक्ष जप करे फिर उसका दशांश होम आम की लकड़ी

समिधा में पूड़ी, खीर, शक्कर, काले तिल, घी मिलाकर करे फिर उसका दशांश तर्पण, मार्जन व ब्रह्मभोज करे तो सन्तान अवश्य होवे।

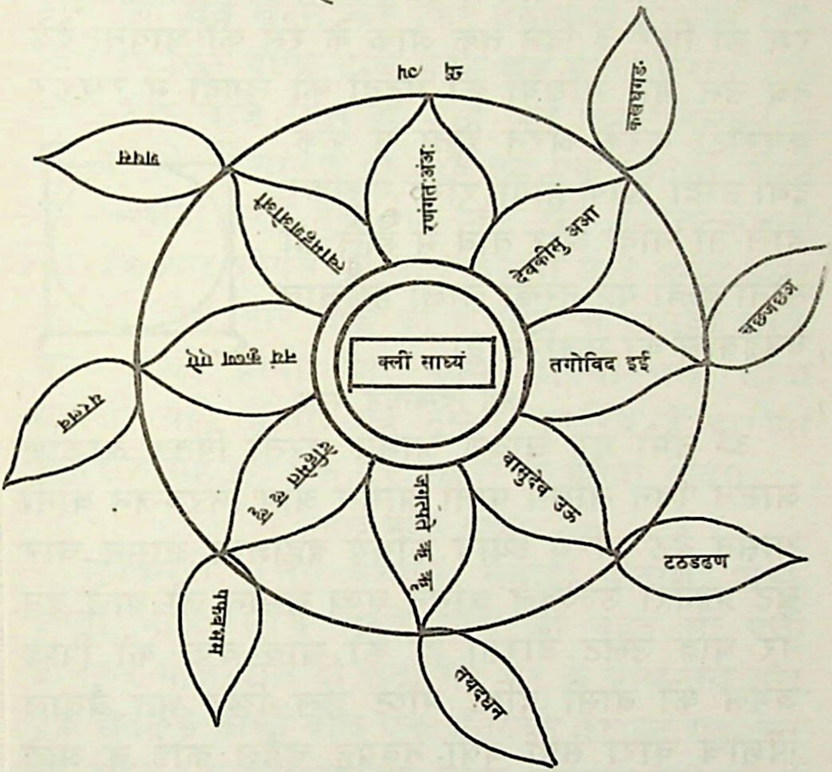

नुस्खा संखिया भस्म से सोना बनाना

संखिया ५ तोला, सफेद घुँघची का रस, बेलिया छेवले (बेलदार पलास) का रस, सफेद आक का रस, मेहंदी की जड़ की बकली की लुगदी बस इतनी चीजें

लेवे पहिले ३ दिन तक संखिया को कुसुम की रीति से कपड़े में छान लेवे अर्थात् शुद्ध कर लेवे फिर ३ दिन तक घुँघची के रस की भावना देवे फिर ३ दिन तक छेवले के रस की फिर ३ दिन तक आक के रस की भावना देवे तब उस शुद्ध संखिया को मेहंदी की लुगदी में रखकर कपरौटी करके अरने छेना में फूँक देवे। उम्दा खाक होगी। राँगा गलाकर डाले तो चांदी और तांबे में डाले तो सोना होवे। यह नुस्खा लाला हन्नूलाल गड़ईवाले का मुजर्रिब है।

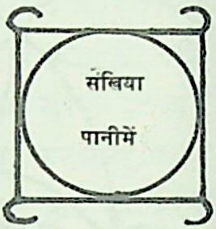

अथ दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ नमो गुरु आदेश आसन धरती पितर आकाश आसन पवन आसन पानी आसन आप निरञ्जन बानी आसन बैठ धरिये ध्यान कथिये ब्रह्मज्ञान आसन चार खूँट प्रकारा उज्ज्वल आसन वज्र समान जो घाले वन पर घाव उलट बीरता ही को खाव वज्र को पिण्ड जंगल को बासी दृष्टि मुष्टि छल छिद्र भूत बैताल पिशाच चौरा सर्पा वृषा नवग्रह चुड़ैल कोई न आवे पास ब्रह्मा को कोट रुद्र की ताल विष्णु की कीली जती हनुमन्त रखवाली जै राम जै श्रीराम रंगा को मंत्र जपन्त बाजी ताल भाजा काल गुरु देवदत्त अवधूत सदा अविचल राजा॥१॥ यह दारोगा महाराजसिंह का बताया हुआ दिग्बन्धन है।

पारद भस्म से सोना बनाना

नौसादर, तवकिया हरताल, पारा, राँगा, आमलासार गन्धक, ये सब एक एक तोला लेवे। पहले पारा और रांगा को खूब खरल करे फिर तवकिया हरताल फिर नौसादर फिर गंधक डाले मगर खूब खरल करता जावे और उक्त चीजें मिलाता जावे जब पारा बिल्कुल न दिखने लगे, ये मालूम हो जावे तब एक आतशी शीशी को कपरौटी करके सुखा लेवे फिर उसी में उक्त कजली भर देवे फिर कोयले की आंच कजली से ४ अंगुल ऊपर तक भर देवे और लोहे की शलाका से टालता जावे, खाक पीली होगी फिर काम आवेगी—चाहे सोना बनाओ चाहे चांदी। यह नुस्खा मुजर्रिब है दारोगा महाराजसिंह को एक पूरे फकीर ने बनवा दिया।

पारा कठोर करना

संगवसरी, (संग यशव), सेनाटा पोटाश, पारा, इतनी चीजें लीजे पहले नीम की बहुत सी पत्ती डालकर गोल गोल दो छेना सेर भर के साथ लेवे और एक छेना के बीचों बीच एक अँगूठे के बराबर गढ़ा कर देवे और ३ माशा संगयशव लेकर पीसकर उस गढ़े में सब तरफ लगा देवे फिर दो माशा सेनाटा पोटाश लेकर बारीक पीसकर थोड़ा सा गढ़े में रख देवे फिर उसके ऊपर पारा १ तोला रख देवे फिर उसके ऊपर १ रत्ती संगबसरी बारीक पीसकर रख देवे फिर उसके ऊपर

थोड़ा सा सेनाटा पोटास रखकर ऊपर से दूसरा छेना ढांक देवे और दोनों छेनों को मिलाकर गोबर अथवा मिट्टी वगैरा से संधि बन्द कर देवे अथवा कपरौटी कर देवे फिर सुखाकर दो सेर जंगली छेने अथवा भेड़ी या बकरी की लेंड़ी या गौशाला के खरोंचन (गोइंटा) में रखकर आंच निर्वात और निर्जन स्थान में देवे। किसी की छाया न पड़ने पावे, स्वांग शीतल होने पर निकाले तो कोई उत्तम पदार्थ सफेद रंग का सख्त बन जावेगा परन्तु परमेश्वर की कृपा चाहिये। यह नुस्खा दारोगा महाराजसिंह को एक पूरे फकीर ने बनवा दिया मुजर्रिब है और एक चीज है।

भीमसेनी कपूर बनाना

सुगन्ध कोकिला, सुगन्धबाला, नागरमोथा कपूर कचरी, बालछड़, कवाबचीनी, सफेद चन्दन, अगर, तगर, बुर्रा, इलायची, छोटी सिलारस, कपूर, इन सबको सम भाग लेकर महीन पीसकर उसी कपूर में मिलाकर एक मिट्टी की छोटी सी हाँड़ी में रखकर ऊपर से ढक्कन ढक देवे और मुख निस्सन्धि कर देवे फिर दीपक की आंच देवे और ठण्डे पानी का पोता हांड़ी पर फेरता जावे तो कपूर उड़कर ऊपर लग जावे। ठंडा होने पर उतारकर शीशी में छोड़े, बस यही भीमसेनी कपूर है। यह नुस्खा महाराजसिंह दारोगा को एक फकीर ने बता दिया। भीमसेनी कपूर की यह पहचान है कि आग

पर रखने से धुआं न देवे।

पारा की खाक

आतशी शीशी में एक तोला पारा धरे फिर उसमें ३ तोला आम की लसी डाले फिर मुख बन्द कर रख देवे तो खाक हो जावेगा।

चांदी बनाना

जंगली जमज पलास (पलास के नीचे पलास) की पींड काटकर पोली करे फिर उसमें आधा सेर पारा भरे फिर उसी पलास के बूरा से खूब भरकर बन्द कर देवे फिर अग्नि देवे तो पारा जमकर चांदी बन जावेगी। यह एक फकीर का बताया हुआ है।

पारा भस्म

पारा, नौसादर, बँगला पान का रस, ये तीनों खूब खरल करे तो पारा खाक हो जावे।

तांबा की सफेद भस्म

लज्जावन्ती के रस में तांबा की सफेद भस्म हो जाती है।

हरताल की भस्म

लज्जावन्ती से हरताल भी भस्म हो जाता है।

चांदी बनाना

रांगा को गलाकर सफेद लज्जावन्ती का रस डाले तो चांदी बने।

पारा भस्म

जंगली लोनियां के रस में पारा घोटे और १५ या २० दिन रखे फिर घरिया में धरकर फूँक देवे। उत्तम वजनदार खाक होगी। तांबे में डाले तो चांदी बने। इसी लोनियां के रस में पारा खूब खरल कर गोली बना लेवे और बीच में छेदकर दही में डाले तो सफेद गोली बंध जावेगी।

सोना बनाना

पारा, गन्धक को खूब घोटकर, घीगुआर के रस की ३०० पुट देवे तो पारा बिना अग्नि के खाक होवे। इसमें अग्नि नहीं देने पड़ती है। तांबा गलाकर जरा सी उक्त खाक डाले तो सोना होवे।

अन्य दवा

बेलपत्र, दौना मरुआ, बँबई, शिवलिंगी, इनके समान भाग रस में जस्ता घोटे और टिकिया बनावे और तांबे के ऊपर जस्ता रखकर उसमें पारा डाले। आसपास अग्नि का अंगार कण्डों का धरे तो सोना होवे।

गन्धक का तेल

आमलासार गन्धक को एक पहर तक जंगली धनियां के रस में घोटे फिर एक थाली में रखकर तिरछी करके घाम में थाली रख देवे तो तेल आपसे आप एक तरफ थाली में निकलकर इकट्ठा हो जावेगा

फिर जरा सा तांबे में चुपड़कर गलावे तो सोना होवे। जंगली धनियां का दरख्त बिलकुल ऐसा ही होता है जैसा कि इस धनियां का होता है परन्तु उसकी पत्ती तोड़कर अगर कहीं मल देवे तो वहां बड़ी देर तक सख्त जलन होती है।

अन्य विधि

पहले एक छटांक पारा और एक छटांक आमलासार गन्धक को ख़ूब खरल करे, फिर दो सेर गाय के दूध में उक्त कजली को औटाकर जब आधा सेर दूध रहे तब दूध निकाल डाले। इसी प्रकार ७ दिन तक करे, फिर उस औटी हुई कजली को २१ दिन तक एक मिट्टी के बर्तन में आधी छटांक पारा डालकर रख छोड़े, फिर उसका मुख बन्द कर कपरौटी कर देवे और पेंदी में सूजी बराबर छेद करे। उसके नीचे एक चीनी का प्याला रखे, फिर उस प्याले पर वह बर्तन रखकर एक गढ़े में ठीक ठीक जमा देवे और मिट्टी या आटा से प्याला निस्सन्धि कर देवे, फिर उस बर्तन के चारों तरफ जंगली छेने की आंच देवे, स्वांग शीतल होने पर निकाले तो प्याला में तेल पीला और सुर्ख़ी लिये सन्तरे के छिलके के समान उतरेगा, फिर रांगा जो कुण्डल के आकार बाजार में पंसारी के यहां टँगा रहता है, उसी को हिरणखुरी रांगा कहते हैं, उसको लाकर बँगला पान के रस में सोध लेवे फिर पतले पत्र करके वही

प्यालेवाला उक्त गन्धक का तेल चुपड़कर अग्नि में तपावे तो सोना बने।

संखिया शोधन मारन

पहले दोलायन्त्र कर गौमूत्र में संखिया को ३ दिन शोध लेवे फिर गाय के दूध में शोधे फिर अमरबेल की लुगदी के बीच में उक्त शुद्ध संखिया को धरे और एक हांड़ी में टेसू की राख खूब दाब दाब भरे। उसी राख के बीच में उक्त संखिया धरे अथवा संखिया पर कपरौटी करके बीच राख में दबा देवे, फिर हांड़ी पर ढक्कन ढककर खूब मजबूती से निस्संधि कर देवे, फिर चूल्हे पर चढ़ाकर दोपहर तक एक सी आँच मन्दाग्नि देवे। बबूल या बेर की लकड़ी की तो संखिया भस्म होवे। एक रत्ती बँगला पान में देवे तो सन्निपात, कास, श्वास, प्रमेह वगैरह अवश्य ही दूर करे। पलाश की राख, तिल की राख, पीपल की राख, इमली की राख, चिरचिरे की राख, केले की राख, इतनी राखों में भी उक्त प्रकार से सँखिया की भस्म हो जाती है। यह बड़ी लाभदायक चीज है।

पारा की खाक से सोना बनाना

पारा २ तोला, संखिया ४ तोला, नकछिकनी का रस १० तोला लेवे, पहले शनीचर की शाम को विधिवत् पीले चावलों से नकछिकनी को न्योता कर इतवार को सूर्योदय के पहले नंगा होकर पूजन कर

बिना टोंके गूगल की धूप और गुड़ की बलि देकर उखाड़ लावे। किसी की छाया न पड़ने पावे फिर उसका स्वरस १० तोला निकाल लेवे, फिर उसमें पारा और संखिया को ७ दिन तक बराबर खरल करे और बराबर सातों रोज शिवपञ्चाक्षर (ॐ नमः शिवाय) मन्त्र का सवालक्ष जप करे करावे जब सूख जावे तब दो चार बूँद पानी भी डाले। बाद ७ दिन के जब सिमटकर गोली सी बन जाय तब विधिवत् वीर हनुमान का पूजन करे, १५ ब्राह्मण जिमावे, फिर एक मिट्टी की कुल्हिया में उक्त गोली रखकर उसमें पाव भर शहद डाले जिसमें गोली डूबी रहे फिर उसका मुख मजबूत बन्द कर कपरौटी करे फिर उस पर टाट लपेटकर सी देवे फिर माटी से खूब लेस देवे फिर सुखाकर रात्रि के समय जंगली छेने से गजपुट में फूँक देवे, पास बैठकर मंत्र जपे, दिग्बन्धन कर लेवे, गणेशजी का भी पूजन करे, फिर स्वांग शीतल होने पर उसको निकाले खाक सफेद चूना के समान तौल में पूरी होगी, ५२ तोला में पाव रत्ती डाले तो सोना अवश्य ही बने।

मन्त्रदिग्बन्धन–जल बांधूं, जलायल बांधू, बांधू जल की काई, तीन खूंट पृथ्वी के बांधू, हनुमन्ता तोर दुहाई।

छोड़ने का मन्त्र–जल खोलूं, जलायल खोलूं, खोलूं जल की काई, तीन खूंट पृथ्वी के खोलूं, हनुमन्ता तोर

दुहाई।

धातुसञ्जीवनी

गुड़, गूगुल, गुंजा, घी, शहद, सुहागा, इन सबको एक में मिलाकर एक चम्मच में रखकर उसमें कोई भी मरी भस्म धातु डाले और आग में गर्म करे तो वह धातु जिन्दा होवे।

चांदी बनाना

पारा, सुहागा समभाग, आदमी के कपाल के तरटे दो भाग इन सबके बराबर बच्छनाग और बच्छनाग के बराबर लाल चीते का पञ्चांग लेवे फिर इन सबको एकत्र करके उसको एक मास तक दिनरात थूहर के दूध में खरल करे। खरल करने के बाद वह चूर्ण वंग पातल (रांगा के पत्र) करके वंग के षोडशांश में तीन बार देवे तो रूपा होवे।

सुवर्ण बनाना

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधरस १ भाग, दोनों को आक के चीक की सौ भावना देवे, फिर लोहे के डमरू यन्त्र में धरकर संधि लेप करे, लोहे के पत्र पर जल धरे फिर १५ दिन बराबर अग्नि देवे। शीतल होने पर निकाले, तांबा गलाकर १ रत्ती डाले तो सोना होवे।

अन्य विधि

शीशा, मेन, मल, सज्जीखार, लाख चुम्बक, लोहा, मोहन्या, भोजपत्र, बच्छनाग इन सबको सम भाग

लेकर अलसी के तेल में खरल करे और उससे पात्र को सन्धि लेप करे, इसको मेनमुद्रा कहते हैं। उसमें नीचे कांसे का पात्र ऊपर पानी, बीच में पारा व गन्धक धरे–इस प्रयोग से अच्छा सुवर्ण होता है।

वंग स्तम्भ

पीला गंधक, पारा इनको खूब घोटकर कजली करे फिर थूहर तथा लाल चित्रक के रस में घोटे, यह रांगे का स्तम्भ करता है।

सोना बनाना

गन्धक से ताँबा मारे और उसमें सिंगरफ मिलाकर महालुंगा (शिवलिंगी) के रस में खरल करके उसको शीशे के पत्रों पर लेप करके पुट देवे। इसी तरह ३ पुट देवे तो शीशे की सिन्दूर की सी भस्म होवे, फिर तांबा गलाकर उसका भस्म डाले तो सोना होवे।

पारा भस्म

सिंगरफ से निकाला हुआ पारा १ तोला लेकर १४ या २१ दिन बगरंडा (रत्नज्योति) के दूध में घोटे फिर कांडीदार थूहर के दूध की पुट देवे फिर करमता के रस की पुट देवे, फिर उसको कुल्हिया में धरकर कपरौटी कर मन्द आंच में फूँक देवे तो खाक होवे फिर गोखरू के पञ्चांग तथा पुरानी अमिली की आंच देवे करमता नाली व लोनियां को कहते हैं। यह नुस्खा शिवानन्द ब्रह्मचारी काशी जोशीमठ का बताया हुआ है।

नुस्खा चांदी

सफेद अभ्रक, सफेद कांच, वच्छनाग, सेंधानोन, सुहागा ये सम भाग लेकर थूहर के दूध में खरल करे फिर कथील (रांगा) के पत्र पर लेप करे फिर सुखाकर घरिया में धरकर अग्नि देवे। वंग पतला होने पर तेल में औटावे और उसी कल्क से लेप करे फिर तपाकर पुत्रजीव के तेल में औटावे। इस प्रकार ७ बार करे तो चन्द्रमा के समान स्वच्छ चांदी बने।

अन्य विधि

पीला अभ्रक, पीला गंधक, पारा, रक्तपुष्प का चूर्ण, इन सबको समभाग लेकर थूहर के दूध में खरल करे, फिर राँगा के पत्रपर लेप कर सुखाकर गलावे तो चांदी बन जावे।

सोना बनाना

हरताल, मैनसिल, ईंगुर, पारा आधा भाग लेवे फिर इन सबको कवली के रस में ३ दिन घोटे और १ भाग रांगा व तांबा पर लेप करके पत्र करे और खपरे में रखकर आंच देवे तो सोना बने परन्तु "मार्गस्थांचासमेयोगी०"

अन्य विधि

हरताल व मैनसिल दोनों को सम भाग लेकर देवदाली के रस में १ दिन खरल करे, फिर शिवलिंगी के रस में १ दिन घोटे, फिर शीशा, पारा, रांगा, एकत्र

खरल करके चूरन करे। वह चूरन २० तोले लेकर पूर्वकल्क में घोटकर पुट देवे। ऐसी ६० पुट देवे तो वह भस्म वंग को स्तम्भ करे। रूपा गलाकर डाले तो शतांश वेध करे।

अन्य विधि

हरताल और पारा को सम भाग लेकर खरल करे, फिर रुद्रवन्ती के रस में घोटे और तांबे के पत्र पर लेप करके पुट देवे तो दिव्य कञ्चन होवे।

हरताल भस्म

गौदन्ती हरताल को शिवलिंगी के रस में दो घण्टा भिगोवे फिर कण्डा पर रखकर अग्नि देवे तो खिलकर खाक होवे। यह कई बीमारियों को दूर करता है और भी कई काम में आता है।

सिंगरफ भस्म

सिंगरफ पीसकर दो घरिया में धरे, उस पर रत्नज्योति का दूध डाले, फिर फूँके तो खाक होवे, कई काम आता है। यह रामटेक के रामानंद स्वामी का बताया हुआ है।

चांदी बनाना

सोना पीपल तथा रूपा बराबर भाग लेकर उसको वंग भस्म देवे तो रूपा होवे।

रांगा स्तम्भन

पीतल १ भाग, रूपा २ भाग, तिरवे (सरसों) ४

भाग, कथील (रांगा) ८ भाग लेवे। ये सब एकत्र करने से कथील (रांगा) स्तम्भ होता है।

मोरपंख व नीलाथोथा व केंचुआ से तांबा निकालना तुत्थ ताम्र, मोरच्युता के चतुर्थांश सुहागा लेकर घी व शहद में खरल करे और कोटि यंत्र में तीव्र अग्नि से फूँक देवे तो तांबा निकले,- मोरपक्ष लेकर बकरी के घी में खरल करे और गुड़, गूगुल, मासे, लोकर, सुहागा, सज्जी, मधु, गुञ्जा, पीपर, लाख, घी ये सम भाग लेकर एकत्र कर अन्धमूसा में धरकर फूँक देवे तो मोरपंख व केंचुआ का तांबा निकले।

सोना बनाना

मनसिल ४ भाग, गन्धक १ भाग, इन दोनों को खरल कर आतशी शीशी में भरकर फिर उसका मुहँ खड़ू व नीमकसे बन्द करे और सिद्ध करे इस योग से चोखा सोना बने।

अन्य विधि

कृष्ण अभ्रक, पारा, मैनशिल, गन्धक ये सब सम भाग लेकर आंतों में भर के गुरु के बताये हुये यन्त्र से आंच देवे तो थोड़े दिन में सिद्ध होवे इसमें अचरच नहीं है।

रूपाबीज

लोहा, गन्धक, सूहागा इनको गलाकर उसमें अभ्रक

डालकर तपावे फिर सोने व रांगे में ताव देकर पुट देवे यह रूपा का बीज है।

पारा भस्म

ईंगुर, माक्षिक, गन्धक, राजावर्तमणि, मूंगा, मैनशिल, मोरच्युता, मुरदासिंग इन सबको सम भाग लेकर चूरन करे फिर पीले व लाल वर्क मिलाकर माल कांगनी के तेल की धूप में पांच भावना देवे इस कल्क से जारण व मारण संस्कार करके फिर कल्क सरवा में धर के बालुका यन्त्र में ३ दिन पाचन करे और बारबार कल्क डालता जावे तो पारे में रंग आवे और शतवेधी बने।

संखिया का तेल निकालना

चिरचिरा की राख के पानी में संखिया कूटकर डाले और अग्नि देवे जब सब पानी जल जावे और सिर्फ तेल रह जाय तब छानकर शीशी में रख छोड़े, फिर पान में एक सींक लगाकर खावे तो कुव्वत मर्दानगी बढ़े और प्रसंग का मजा पावे यह नुस्खा दारोगा महाराजसिंह का परीक्षा किया हुआ है।

रांगा स्तम्भ संखिया मोम की विधि

संखिया २ तोला, जमालगोटा की मींगी २ तोला लेवे फिर दोनों को पीसकर गोली बांधे कपड़े में बांधकर हांड़ी में लटकावे दो अंगुल पेंदे से ऊपर रहे उसमें डेढ़ सेर भेड़ी का दूध डालकर कपरौटी दृढ़कर

पलास की लकड़ी की मन्द आंच देवे तो दो तीन घण्टे में संखिया मोम समान हो जावे फिर उसको बांटकर गोली बनावे और एक डिब्बी में बनात के टुकड़ों की तरह लगा कर रख छोड़े यह रांगा का स्तम्भ करता है यह नुस्खा स्वामी रामानन्द ब्रह्मचारी रामटेक का बताया हुआ है।

चांदी बनाना

हरताल, अभ्रक, बच्छनाग, पारा, सुहागा ये सब मिलाकर उसमें रांगा मिलावे फिर पीपल के छाल की अग्नि देवे तो उत्तम चांदी बने।

वंग भस्म बनाना

रांगे को खपरे में डालकर चूल्हे पर चढ़ावे और आग देकर गलावे जब गलकर पानी हो जावे तब शमी (छिकुरा) की लकड़ी से खूब घोटे तो रांगा भस्म होवे।

अन्य विधि

हरताल, रांगा इन दोनों को अर्क के रस में खरल करे और पीपल की सूखी छाल की अग्नि देवे इस प्रकार ७ बार करे तो वंग भस्म होवे।

अन्य विधि

रांगा को एक दिन भिलावां के तेल में खरल करे फिर गोली बनाकर भैंस के सींग में भरकर महापुट देवे इसी तरह ७ बार करे तो उम्दा भस्म बने पारद कर्म में

लगावे अथवा तीखे को गलाकर उसमें चौंसठवां हिस्सा उक्त भस्म डाले तो चोखी चांदी बने।

नागभस्म विधि

शीशे के पतले पत्र बनाकर घीकुवार के पत्तों में घर्षण करने से उसी वक्त मरे, और कुमारी की पत्ती के गीरी में खरल करके गजपुट में भस्म करे इसी तरह सौ पुट देवे तो केवल सिन्दूर होवे रूपा व तांबे में गलाकर डाले तो शतबेध करता है। एक लोहे की कड़ाही में शीशे को गलावे और शीशे के सम भाग कल खापरी का चूरण डालकर एक पहर पचावे और पत्थर के चिकने मुसरासे घोटे तो १ पहर बाद हिंगुल (ईंगुर) का चूरन शीशे के बराबर लेकर पत्थर के मुसरा से खूब घोटे फिर २१ दिन तक खूब तेज अग्नि देवे तब वह भस्म केशर की रंगत की तैयार होवे उस भस्म का चौंसठवां हिस्सा चांदी गलाकर डाले तो सोना होवे।

नुस्खा सिंगरफ मोम

सिंगरफ रूमी तोला ८ को ब्रह्मदंडी के दूध में घोटकर उसकी कोंपल में केवल बहुत मोटे एक ही उपले की पुट देवे इसी तरह १२० पुट देवे तो सिंगरफ मोम होवे आठ बारह चांदी को रँगता है मुजर्रिब है।

सोना बनाना

सनाय का हरा पत्ता १ भाग. पहाड़ी नमक १ भाग

दोनों मिलाकर पीसकर नाल के पत्र करके एक सनाकी में रखकर तले ऊपर दो सौ छेना में फूँक देवे तो सुर्ख हो जायगा, फिर एक भाग तांबा २ भाग चांदी मिलाकर चार पुट देकर नमक में जब कसाफत दूर होकर कुन्दन नजर आवे तब गलाकर काम में लावे।

नुस्खा काष्टिक

फिटकरी २० तोला शोरा २० तोला, नमक १० तोला मिलाकर तेजाब निकालें, फिर उसमें ३ तोला चांदी का बुरादा डाल दें जब मिल जावे तब आठ तोले विलायती चूना मिलाकर टाल देवे और ब्लाटिंग पेपर से छानकर शीशी में भर रखे यही कास्टिक बन गया।

सिंगरफ भस्म

१२१ गुले अब्बास, गुड़ पावभर, सिंगरफ रूमी १ तोला, पहिले सिंगरफ को आंच देवे फिर ५ सेर का कंडा आदमी के बाल माशा ३, अण्डे के छिलके माशा ६, शहद से पीसकर लेप करे, दरम्यान कण्डे के रखकर गजपुट में जलावे जल्दी करे ताकि जल न जावे फिर अजवाइन अजमोद, खुरासानी अजवाइन, ये तीनों शहद में पीसकर लेप करके सकोरे में रखकर एक सेर उपले में जलावे तो खाक होवे चावल भर एक तोला चांदी को बस है।

शीशा भस्म

४ तोले शीशे को बारीक रेतकर अर्कधूक से चन्दन समान खरल करना, फिर गोला बना कर कपरौटी करके कुक्कुट पुट देना, फिर निकालकर धूक से हल करना, फिर गोला बनाना फिर पुट देना तो सिन्दूर होगा फिर उस सिन्दूर को धूक से हल करके मूस बनाना, फिर १ तोला नीलाथोथा उस मूस में रखकर ऊपर उसी का गोला लेसकर सात कपरौटी कर गजपुट में फूँक देना तो भस्म होगी तोला भर में १ माशा देना चांदी, तांबा, पारा, तीनों पर चलती है बड़ी उम्दा चीज है।

सोना बनाना नुस्खा खंजीर

४० सेर चने का आटा, दो सेर तवकिया हरताल इन दोनों को एक में पीसकर सुअर को खिलावे और गोबर उसका लेकर पाताल यन्त्र से तेल निकालकर रखे, फिर तांबा गलाकर डाले तो सोना होवे मुजर्रिब है।

सिंगरफ भस्म से सोना बनाना

एक छिन्द (जंगली खजूर) के पुरानें दरख्त छेद करके १ तोला सिंगरफ और १ तोला संखिया दोनों मिलाकर भर देवे, फिर उसी के छिलके से बन्द करके दूध लगा देना और वहां पर निशान कर देना फिर छः महीने के बाद एक बालिश्त नीचे ऊपर छोड़कर काट

लेना, फिर छाया में सुखा लेना जब छिलका सूख जावे तब पवित्र स्थान में रखकर होम धूप देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर रात भर आग देना फिर सबेरे सब राख को हवा से उड़ा देना वह दवा मुख के फूँकने से न उड़ेगी, फिर उसको हिफाजत से उठा कर एक चांदी की डिब्बी में रख देना, फिर १ तोला तांबा को गलाकर उसमें १ माशा उक्त खाक डाले तो पीला सोना होता है और पारा व रांगा को चांदी बनाता है मात्रा ऊपर लिखी जा चुकी हैं।

भूत प्रेत का अञ्जन

त्रिफला, त्रिकुटा, वच, हींग, पीपरि, सरसों, सेंधा, कूट, कुटकी ये सब सम भाग लेकर बकरी के मूत्र से काजल समान बारीक घोटकर गोली बनाकर छाया में सुखावे, फिर जरूरत पर स्त्री के दूध में घिसकर आँखों में अञ्जन करे तो भूत, प्रेत, पिशाच वगैरह चिक्कार देकर भाग जावे।

विषमज्वर की दवा

जीरा, मिश्री खाय अथवा तुलसीदल और मिर्च पीवे अथवा नीम की टाँकी और मिर्च पीवे अथवा करौंदा की पत्ती और मिर्च पीवे, अथवा कूट की मिश्री खाय तो विषमज्वर व वातज्वर दूर होवे और जवासा, लौंग, शक्कर खाय तो कफज्वर मिटे दमजरी शक्कर खाय तो सन्निपात जाय।

बवासीर की दवा

घमरा, अमलबेत, तंतड़ीक, जीरा ये सब एक एक तोला लेवे और सब के बराबर पुराना गुड़ मिलाकर माशा छै छै की गोली बांधकर रोज खावे तो बवासीर जाय।

सर्व प्रकार की खांसी की दवा

कड़ुई लौकी के बीज, अजवाइन, तालीस,नागकेशर, पीपरि, मिर्च, धतूरे के बीज ये सब सम भाग लेकर अफीम आधा भाग और लौंग तज ये सब औषधियों से चौथाई भाग लेवे फिर सबको पीस छान बँगला पान के रस में घोटकर माशा माशा भर की गोली बांधे फिर एक एक गोली दोनों समय खाय तो सर्व प्रकार की खांसी अवश्य ही दूर होवे कोता दमी मिटे।

सर्व प्रमेह व मूत्रकृच्छ्र की दवा

खीरा के बीज, काली मूसली, इलायची, पाषाणभेद, जवासा की जड़, बीजबन्द, शंखाहूली, गिलोय, घमरा, हल्दी ये सब सम भाग लेकर पीस छानकर आमला के रस में भिगोवे फिर घी में भूने फिर सबकी बराबर शक्कर मिलाकर एक एक तोला दोनों वक्त खाय तो धातु प्रमेह मूत्रकृच्छ्र, पथरी सब होवें।

बद व गिल्टी की दवा

पुरानी ईंट का चूरा ४ तोले, अफीम २ तोले, गेरू २ तोले, हल्दी २ तोले, मँजीठ २ तोले लेवे फिर सबको

महीन पीसकर महुआ के रस में घोटकर टिकिया बनाकर बांधे या लेप करे तो सूजन दूर होवे बद व गिल्टी वगैरह बैठ जावे।

फिरंग गरमी की दवा

छोटी हर्र ३ तोला, इन्द्रायण की जड़ २ तोला, पीली कौड़ी की राख १ तोला, मुरदासिंग १ तोला लेवे फिर इन सबको पीस छान कर लोहे की कड़ाही में डालकर नीम के सोंटे से १०१ नींबू का रस डाल डालकर घोटे फिर चना सम गोली बनाकर एक गोली मलाई में लपेटकर खावे तो १४ दिन में असाध्य भी फिरंग गर्मी दूर होवे पथ्य गेहूं चना को मिलाकर रोटी बनाकर अलोनी खावे।

पीनस की दवा

कटाई का रस, पावभर, अनार की पत्ती का रस पावभर, दोनों को आधा पाव तिल के तेल में पचावे जब तेल मात्र बाकी रहे तब छानकर शीशी में रख छोड़े, फिर ५ बूँद नाक में डाले तो पीनस दूर होवे और नेत्र के रोग भी आराम होवें।

स्तम्भन की दवा

जायफल ६ तोला, जावित्री २ तोला, शहद १ तोला लेवे पहिले दूध में घोटकर शहद में गोली बांधे थोड़ा सा घी चुपड़ लेवे फिर रात्रि को १ गोली खाय तो स्तम्भन होवे जब नींबू चूसे तब छूटे।

पथरी की गोली

रेवत चीनी २ तोला, कवाबचीनी, मौरेठी, (शोरा कल्मी), मेहँदी ये सब एक एक तोला बड़ी इलायची २० अदद इन सबको पीस छानकर चूरन करे, फिर बकरी के आध पाव दूध में आध पाव पानी मिलाकर उसी में १ तोला उक्त चूरन डालकर खाय तो पथरी गिर पड़े चिनग मिटे, पथ्य दही भात खाय।

सर्व शरीर के दर्द की दवा

मालकांगनी और मेथी इन दोनों को सम भाग लेकर बकरी के दूध में पीसकर लगावे तो शरीर की पीड़ा मिटे।

सुजाक की दवा

कल्मी शोरा, रेवतचीनी, बड़ी इलायची, जवाखार, मिश्री इन सबको सम भाग लेकर पीस छानकर ३ पुड़िया बनावे, फिर १ पुड़िया अर्थात् १ तोला दूध में पानी मिलाकर उसके साथ खावे तो इन्द्री जुल्लाब लगे और रोग पेशाब के रास्ते निकलकर गिर जावे खुराक १ तोले से २ तोले तक है, ३ दिन बराबर दवा खाय और पथ्य दूध भात खावे और कोई भी चीज न खावे।

मुख से रक्त गिरना दूर होवे

छुहारे की गुठिली निकालकर उसमें अफीम भरकर पुट पाक की रीति से पका लेवे, फिर निकालकर चूना

मिलाकर माशा २ भर की गोली बना लेवे, फिर १ गोली पानी से खाय तो मुख से रुधिर गिरना बन्द होवे पथ्य दाल भात खावे।

बिन्दुकुशाद की दवा

केंचुआ की माटी लेकर लिंग के सूराख में तीन दिन तक भरे तो सूराख छोटा होवे मूत्र की धार महीन निकले।

पीनस की दवा

महुआ की जड़ को कूटकर गोला बनाकर पुट पाक की रीति से चुरोकर अर्क निकाले, फिर २ व ३ बूँद नाक में डाले तो पीनस आराम होवे।

सुस्ती नामर्दी पर लेप

अजवाइन माशा ८ इसबंद माशा २० आम की गुठली १ अदद अफीम १ तोला, घी १० तोला लेवे फिर इन सबको १ पहर तक घी में खूब खरल करे फिर कपड़े की पट्टी लगाकर लिंग पर वह पट्टी बाँधे तो लिंग की सुस्ती मिटे और कठोर होवे।

नेत्र के तिमिर व जाला की दवा

काकजंघा की जड़ ४ माशा, शहद ४ माशा, घी १ तोला से पीवे तो धुन्ध, तिमिर, जाला कटे दृष्टि निर्मल होवे।

नेत्र के सर्व रोगों की दवा

मिश्री तोला १, नीलाथोथा माशा ३, वंगरक्ती ५

लेवे, फिर इन सबको कांसे के पात्र में नीम के सोंटा से १ पहर रगड़े फिर गोली बनाकर रख छोड़े, फिर मेह का पानी या स्त्री के दूध में घिसकर लगावे तो नेत्र के सर्व रोग दूर होंगे।

दमजरी के गुण

दमजरी अजवाइन से खाय तो कड़क कसक जाय सोंठि से खाय तो बात नाशे पीपरी से खाय तो भूख बढ़ावे, गाय के दूध से खाय तो पुष्टि होवे ४० दिन पान के रस से खाय तो बन्धेज होवे, शक्कर से खाय तो पित्त नाशै, मधु से खाय तो ज्वर नाशै, हर्र से खाय तो हड़फूटन मिटे, नींबू व पान से खाय तो मर्दूमी आवे, सुपारी से खाय तो मुख में स्वाद आवे, अरुचि मिटे नीम से खाय तो सफेद कोढ़ जाय, गाय के घी से खाय तो दृष्टि निर्मल होवे, पक्के नींबू से खाय तो रति में प्रबलता होवे, पमार के बीज से खाय तो दाद, खाज, नाश होवे, परंतु खटाई न खावे बकरी के दूध से खावे तो तिमिर रतोंधी जाय स्याह जीरा से खाय तो झोला बाई मिटे। शहद हर्र से खाय तो सकल प्रमेह व मूत्रकृच्छ्र, पथरी, बिन्दुकुशाद आदि सब दूर होवें। भंग से खाय तो पिण्डरोग (जलोदर) नाश होवे, सोंठि शहद से खाय तो अजीर्ण मिटे, पिप्पली मूल शहद से खाय तो खांसी, कफ, श्वास, क्षयी दूर हो। शहद कुटकी से खाय तो सन्निपात नाशे। बकरी के मूत्र से खाय तो

ताप तिजारी मिटे। नींबू के रस से खाय तो सर्प विष नाशै रक्त पित्त भी दूर होवे। गौमूत्र से खाय तो श्वेत कुष्ठ दूर होवे। चिरायता मिश्री से खाय तो सर्वरोग नाश होवें इति दमजड़ी के गुण।

यह बूटी बहुत ही कड़ुई होती है, अमिली की पत्ती के समान पत्ती है परंतु उससे लम्बी और पेड़ दो तीन गिरह ऊंचा होता है। नाई (नाभी) बूटी से करीब करीब बहुत सा मिलता है खुराक माशे २ से ४ तक है।

समुद्र फल के गुण

समुद्र फल को तिल्ली के तेल में घिसकर तिलक कीजे तो मोहनी होवे नेत्ररोग भी मिटे निर्गुण्डी के रस में घिसकर तिलक कीजे तो सभा मोहन होवे। मट्ठा में बांटकर लेप करे तो गलगंड, गंडमाला, ग्रन्थी ये सब दूर होवें। तेल में चुरोकर लगावे तो फोड़ा फुंसी नाश होवे। सहिंजन के रस से लगावें तो बद, गिल्टी, कखवारी, दर्द का नाश होवे। आमला के रस से खाय तो अण्डवृद्धि नाशे अशोक के पत्तों के रस से नाश लेवे तो मिरगी मिटे, स्त्री के दूध में घिसकर नाक में टपकावे तो कफ व रतूवत दिमाग से साफ करे। पानी में घिसकर जिस तरफ दर्द न हो उस तरफ के नथुने में टपकावे तो आधाशीशी दूर कर देता है आजमाया हुआ है। दही के साथ खाने से दस्तों को बन्द करता है। अजवाइन सेंधा

नमक के साथ खावे तो पेट के दर्द को बन्द करता है। बकरी की पेशाब में घिसकर आंख में लगावे तो रतोंधी, तिमिर, जाला, दर्द दूर करता है। और साँप की काटी हुई जगह पर लेप करे तो साँप के जहर को दूर कर देता है। औंरा, हर्र बहेड़ा के पानी अथवा लौंग के पानी में घिसकर लेप करे तो गंडमाला मिटे। शहद में घिसकर लिंग पर लेप करे तो धातु को ताकत देवे। सोंठि के साथ घिसकर लेप करे तो जोड़ों की सूजन व दर्द (गठिया वात) को नाश करे। एक अदद साबुत ही थोड़े से दही में लपेटकर निगल जावे तो गर्भाधान कर देता है, मगर ऋतु स्नान के बाद निगले और फूटने न पावे। दो अदद समुद्र फल और ४ अदद पीपरि इन दोनों को एक ही में जलाकर भस्म करे, फिर वही भस्म रत्ती २ बँगला पान में रखकर खावे तो दमा नाश होवे। पानी में घिसकर बीछी के डंक मारने की जगह पर लेप करे तो दर्द दूर करे तुलसी के पत्ते माशा २ समुद्र फल माशा २, मिर्च माशा २ इन सबको पीसकर खावे तो वात का सर्व प्रकार का दर्द नाश होवे। समुद्र फल दरख्त का फल है छोटी हर्र से कुछ बड़ा होता है और ४ पहल रहते हैं रंग सुर्ख और पुराना होने पर स्याह रंग हो जाता है खुराक माशे २ से ४ तक है।

काया कल्प

हर्र ३० तोला, घमराका रस ३० तोला, गोखरू का

रस ३० तोला, पमार के बीज ७ तोला, गुड़ पुराना ७ तोला लेवे, फिर इन सबको मिलाकर शहद से गोली बांधे फिर १ वक्त खाय तो पहिले महीने में आलस जम्हाई मिटे, दूसरे महीने में पेट के सर्वरोग नाश होवे बायगोला, शूल, पथरी, कुरकरी वगैरह सब मिटें तीसरे महीने में शरीर मोटा होवे, भूख लगे, चौथे महीने में बल पुष्ट होवे, स्त्री भोग बहुत करे पांचवें मास में बाल काले होवें, सिर के सर्वरोग मिटे, छठे महीने में कामदेव अति प्रंचड होवे धातु खूब बढ़े वातादिक दूर होवें। सातवें मास में दृष्टि निर्मल होवें, नेत्र के सर्व रोग दूर होवें आठवें मास में सर्वव्याधि मिटे, भगंदर दूर होवे नववें मास में कायाकल्प होवे दृष्टि बढ़े, दिन में तारा गण दीखें, अन्धा भी दृष्टि सम्पन्न होवे। दशवें मास में भुजाओं में अत्यन्त बल बढ़े सूरज के समान प्रभा उत्पन्न होवे, सर्व रोगों का नाश होवे बल वीर्य, रुधिर, क्षुधा अत्यन्त बढ़े, आयु भी बड़ी होवे इति दशमासिक कल्पसमाप्त।

नुस्खा कीमियां मुजर्रिब

बिसमिल्लाहिर्रहमानरहीम, ईं कि अज सय्यद मुहम्मद नुस्खा कीमियां तय्यार करदह व दाहद पसन्दी व वक्त तव्वाफ कावा अल्लाह तशरीफ व हजरत भाई साहेब किबलै ताबुरदह व कस्म हमाकून वखशीदह व गुफ्त कि दर तय्यारी व तरतीब दवा मजकूर हेच

तफावत न करदह अम अगर चीजे हम कसूर दरदवा या इजहार नमूदह वाशद कस्म हमून कावा अस्त व फजले इलाही इस्म दवा जुम्लै ईं कि दर एक जवान काफूर चीनी गोयन्द व एक जवान काफूर भीमसेनी गोयन्द व एक जवान काफूरजी गोयन्द यानी कि कायम वाशद शिनाख्तन आं ईं अस्त कि दादह वर आतिश दूद पैदा न कुनद मिस्ल मोम अज रोशनी व हरसोजद काफूर मजकूर पाव तोला यानी सह माशा सिंगरफ रूमी एक तोला, नींबू कागजी, अदद वर्ग हिना खुश्क साइदह माशा १, सिंगरफ रूमी १ तोला, रादर एक लीमू करीव निस्फ निस्फ आंरा चाककर दह माशा हिना जेरव बाला करदह दर लीमू मजकूर वायद अन्दाख्त बालाय आं पारचा करदह गिले हिकमत करदह ता एक रोज खुश्क साजद मिनवाद आं लीमू रादर आतिश बबूल चूल्हा पुख्तां नुमायन्द ता एक पहर अज ईं अनवानदर दह लीमू अज वदरका हिशनाता दहरोज दर आतिश मजकूर पुख्ता नुमायन्द व फजले इलाही सिंगरफ मोम शवद मिस्ल मोम नर्म ख्वाहिद शुद मिनवाद आं दरअर्क जोहरा गोस्फन्द व फासिले एक एक पहर दर चहार पहर चहार जोहरा गोस्फन्द घड़ा (रगड़ना) साजन्द व हरगिज दर चहर पहर तफावत एक घड़ी न शवद मिन बाद आं चहार हिस्सा सिंगरफ रानीम हिस्सा दबाय मजकूर यानी काफूर जी

गिरफ्ता अज अर्क टीप घीगुआर एक रोज तमाम यानी चहार पहर बिला तफावत मालिश नुमायन्द मिनवाद तय्यारी मोम मिस्ले मीशवद आंरादर कहवादान (हांड़ी या कटोरी) जरूफ चीनी अन्दाख्ता बालाय आंनीज कहवा दान चीनी सरपोश बन्द करदन जरूरस्त व नीज आरद गन्दुम बन्द, साजन्द वाद हू आं जरूफ रादर जमीन एक बालिश्त गड़हा करदह दफन कुनद ता हश्त रोज साजन्द मिनवाद रोज नहुम अज जमीवर आबुरदह निगाह दारन्द मवाफिक मोम नरम सिंगरफ मी शवद दर ईं दबाय यानी सिंगरफ एक माशा गिरफ्ता दो माशा मोम माकविल नमूदह मालिश दिहन्द ताकि मालूम न शुद मिनवाद दो सेह तोला नुकरा आं मोम रा टिकिया करदह दरमियान टिकिया नुकरा रा अन्दाख्ता दर आतिश वायद अन्दाख्त व फजले इलाही रंक नुकरा तिलाई खालिस मीशबद इस्मा कदरे नुकरा मजकूर सूराख साजन्द तमाम शुद नुस्खा मुजर्रिब।

आंख के सर्वरोग नाशक दवा

तमाखू ५ तोला बारीक कतरकर बासी पानी में ३ दिन तक भिगो देवे फिर कांसे के कटोरे में नीम की जड़ के सोंटे से २ दिन तक घोटना फिर गोली बनाकर छाया में सुखा लेना फिर नींबू के अर्क या मही में घिसकर आंखों में लगाओ तो आंखों के सर्वरोग नाश

होवें।

जाडा बुखार की दवा

विषखपरा की जड़ २० तोला, काला जीरा ४० तोला इन दोनों को खूब बारीक कूट लेना, फिर कंकड़ बुझाकर देना तो ३ दिन में ताप दूर होवे।

अन्य दवा

खूब कलां माशा ३ को शाम को दो तोला में भिगो देवे सबेरे उसमें एक चांदी का छल्ला बुझाकर पिला देवे तो ७ दिन में सर्व प्रकार का ताप दूर होवे।

अन्य दवा

पित्तपापड़ा १ तोला, नागरमोथा १ तोला, अमलतास १ तोला, गिलोय २ तोला इन सबका काढ़ा बनाकर पीवे तो सर्वप्रकार का ज्वर दूर होवे।

अन्य दवा

नीम की छाल ४ माशा, एलुआ १ माशा, धनियां ४ माशा, लाल चन्दन, २ माशा, बादाम का छिलका २ माशा, इन सबका काढ़ा बना कर पीवे तो सर्व प्रकार का ज्वर दूर होवे।

अन्य दवा

पित्तपापड़ा ६ माशा, कासनी ३ माशा लाल चन्दन ३ माशा, गिलोय १ तोला, इलायची ३ माशा, सनाय ३ माशा इन सबका काढ़ा बनाकर पीवे तो सर्व प्रकार के ज्वर दूर होवें।

सरसाम की दवा

गुलबनप्सा, गुल नीलोफर, गुलाब के फूल, पालक ये सब एक एक छटांक लेकर मानकद्दू के दूध में खरल करके सिर में लेप करे तो गरमी का सरसाम दूर होवे।

अन्य दवा

सोंठि १ तोला, अकरकरा १ तोला, फिलफिल १ तोला इन सबको पीसकर सिर में लगावे और अकरकरा १ तोला, फिलफिल १ तोला इन दोनों को खूब बारीक पीस छानकर नस्य लेवे तो बहुत छींकें आवें। अथवा एक मुरगे का पेट फाड़कर आंतें वगैरह सब निकालकर फेंक देवे फिर सिर में टोप की तरह पहिना देवे और पिड़की का खून या कबूतर का खून या मुरगी का खून शिर पर लगावे तो कफ का सरसाम अवश्य ही दूर होवे।

लकवा की दवा

रोगन बादाम १ तोला, रोगन अखरोट १ तोला, रोगन पिस्ता १ तोला इन तीनों को मिलाकर नाक में पांच बूँद दिन में ३ बार टपकावे और कबूतर के शोरुवा में शहद मिलाकर पिलाया करे तो लकवा दूर होवे।

पीनस की दवा

अजमोद १ तोला, बायविडंग १ तोला, सिंगरफ १ तोला, अजवायन खुरासानी १ तोला, केशर १ तोला

इन सबको खूब बारीक पीस छानकर नाक में नस्य लेवे तो कीड़ा मरें पीनस आराम होवे।

अन्य दवा

हल्दी, दालचीनी, जावित्री, लौंग ये सब सम भाग लेकर शहद में मिलाकर माशा ९ रोज खावे तो पीनस दूर होवे।

दमा की दवा

बारहसिंगा की भस्म १ तोला, मिर्च काली मिर्च १ तोला, नमक सांभर १ तोला ये सब एक में पीसकर माशा ३ पान के बीड़ा में रखकर खावे तो १५ दिन में दमा दूर होवे।

शूल व बायगोला की दवा

चिरचिरे की राख ५ तोला लेकर घमरा के रस और १ तोला खारी नमक में खरल करके झरबेरी के बेर बराबर गोलीं बनाकर खावे तो दमा व शूल व बायगोला दूर होवे।

प्रसूत की दवा

लोबानका सत रत्ती १ पान के बीड़ा में रखकर खावे तो प्रसूत दूर होवे कौड़िया लोबान ५ तोला लेकर एक मिट्टी की हाँड़ी में रखकर हाँड़ी का मुख कागज की टोपी से बन्द कर देवे फिर चूल्हे पर चढ़ाकर घी के चिराग की आंच देवे तो लोबानका सत उतरे।

भगन्दर की दवा

पारा, मुरदासिंग, रस कपूर, मैनसिल, सिंगरफ, नीलाथोथा, भिलावाँ की भस्म, ये सब बराबर लेकर तीन दिन नींबू के रस में खरल करे, फिर सरसों समान गोली बनाकर १४ दिन खावे तो भगन्दर आराम होवे।

ताम्र भस्म

तांबे को गरम करकर ७ बार आक के दूध में बुझाना, फिर एक मिट्टी के कूजे में रखकर कपरौटी करके जंगली उपले में रखकर फूँक देवे तो तांबा भस्म होवे।

मोती की भस्म

मोती को खरगोश की तिल्ली में भरकर अरने छेने में रखकर फूँक देवे तो भस्म होगा।

मोम बनाना

राल १।। सेर, चरबी १ सेर, सफेदा २ तोला टूले का तेल ४ तोला लेवे, पहिले एक लोहे की कड़ाही में चरबी डालकर पिघलावे, फिर उसमें राल सफेद महीन पीसकर डाले, फिर सफेदा डाले, फिर टूले का तेल अथवा महुआ का तेल डाले, फिर करछी से खूब चलाकर कड़ाही उतार लेवे, फिर पानी डालकर बुझा लेवे तो बहुत उत्तम मोम बनेगा अगर मोमबत्ती बनाया चाहे सांचे में ढाल लेवे।

त्रिवंग भस्म

राँगा, पारा, तांबा इन तीनों को सम भाग लेकर गलाकर एक में मिला लेवे, फिर गाँजा की भाँग भिगोकर पीसकर गोला बनाकर उसके भीतर दवा को रखकर कपरौटी करके जंगली छेना में फूँक देंवे तो भस्म होवे। पान में रखकर १ रत्ती खावे तो धातु के सर्वरोग नाश होवें।

त्रिवंग भस्म

तांबा, रांगा, पीतल इन तीनों को सम भाग लेकर पहिले तांबा व पीतल को गरम करकर बड़ के दूध और बकरी के दूध में सात सात बार बुझावे, फिर गन्धक पीसकर एक मिट्टी के कूजे में रखकर दोनों चीजों की तह लगा देवे फिर ऊपर नींबू का रस भर देवे, फिर कपरौटी करके गजपुट में फूँक देवे तो भस्म होवे, फिर रत्ती १ पान में देवे तो कफ, वात, दमा दूर होवे।

परमा की दवा

फिटकरी की खील माशा २ गाय के १ तोला घी से खाय तो परमा दूर होवे।

दमा की दवा

नीलाथोथा १ तोला, अण्डे की सफेदी २ तोला में घोटकर दूसरे अण्डे में भरकर अण्डे का सरपोश लगाकर आटा से सन्धि बन्द कर कपरौटी करके अरने छेने का जगरा लगाकर उसमें रखकर फूँक देवे तो

नीलाथोथा की भस्म होगी। फिर पान में रखकर दो चावल खावे तो दमा अवश्य ही दूर होवे।

सरदी व बादी की दवा

रसकपूर, लौंग, सोंठि, इलायची ये सब सम भाग लेकर शहद में घोटकर चिरौंजी समान गोली बनाकर खावे तो सरदी व बादी दूर होवे।

भगन्दर की दवा

मुरदासिंग १ तोला, कलौंजी १ तोला, गुड़ व चूना जिस कदर जरूरत हो, लेवे। फिर सबको एक जगह खरल करके चना समान गोली बनाकर खावे तो भगन्दर दूर होवे।

शीतल फौलाद भस्म

फौलाद का बारीक रेत १ तोला लेकर जस्ता की कटोरी में रखे फिर हररोज उसमें मदार का दूध इतना डाले कि फौलाद डूबा रहे और सारे दिन सूरज की धूप में रखे। इसी तरह ३ दिन करे। चौथे दिन बिना ही आग के खुद बखुद भस्म हो जावेगा। खुराक रत्ती रत्ती है। अलग अलग अनूपानों से कई रोग दमा, खांसी, जीर्णज्वर, प्रमेह, प्रसूत वगैरह आराम करता है।

सर्व ज्वर की दवा

जीरा, सोंठि, धनियां, पीपरि, पीपलासूल, कुटकी, चिरायता, लौंग, बायविडंग, गिलोय, शक्कर, नीम की अन्तर छाल, खूबकलाँ इन सबको सम भाग लेकर पाव

भर पानी में १ तोले का काढ़ा बनाकर पीवे तो सर्व प्रकार के ज्वर नाश होवें।

पेशाब बन्द की दवा

समुद्रफेन ३ माशा, चूना कली का ३ माशा, शहद ३ माशा, सीसा कच्चा बराबर भाग करके खरल करना, फिर पेडू पर लेप करे तो बन्द मूत्र खुले, पेशाब जारी होवे।

त्रिवंग भस्म

रांगा, सीसा, पारा ये तीनों सम भाग लेकर पहले रांगा व सीसा एक में पिघलाकर उसमें पारा डाल देना, फिर पानी बुझाकर थकिया कर लेवे, फिर घीकुवार के गूदा में रखकर एक मिट्टी के कूजे में रखकर मुख बन्द करके गजपुट में फूँक देवे तो भस्म होवे। पान में रखकर १ रत्ती खावे तो धातु के सर्व रोग नाश करे।

हरताल भस्म

पहले तवकिया हरताल लेकर बकरी के मूत्र में ३ दिन शोधे, फिर मदार के दूध में डुबाकर एक मिट्टी के कूजे में रखकर मुख बन्द कर अरने छेना में रखकर फूँक देवे तो भस्म हो जावेगी। खुराक रत्ती १ है, शक्कर से खाय तो जाड़ा बुखार दूर करे, शहद से खाय तो कोढ़ नाश करे, पान में रखकर खावे तो कफ, खांसी, दमा, शीत, वात दूर करे।

हरतालभस्म ५ सेर की भूख करे

तवकिया हरताल २ तोला, शोधा हुआ पारा २ तोला, इन दोनों को दोपहर तक खरल करे फिर गूमा के रस में १२ पहर खरल करे, फिर अर्क दूध में १२ पहर खरल करे, फिर सनाय के रस में १२ पहर खरल करे फिर मकोना के डोंडे के दूध में १२ पहर खरल करे, फिर मिट्टी के कूजे में रखकर १०१ कपरौटी करके सुखा लेवे, फिर पुरुष बराबर गहिरा गढ़ा खोदकर उसमें बहुत सी लकड़ी और जंगली छेना भरकर बीच में उस कपरौटी को रखकर फूँक देवे। स्वांग शीतल होने पर निकालकर शीशी में रख छोड़े। खुराक रत्ती १ से ३ तक है। पान के साथ शीत ऋतु में खावे तो ५ सेर की भूख लगे, गरमी की ऋतु में गाय के एक छटांक मक्खन के साथ खावे तो सात स्त्री की ताकत आवे और भी कई अनूपानों से कई रोग दूर करे।

सर्वरोग नाशक हरताल भस्म

तवकिया हरताल ५ तोला लेकर आठ पहर गोमूत्र में भिगोवे, फिर गाय के मूत्र में ३ दिन खरल करे, फिर सेहुँड़ के दूध में ३ दिन खरल करे, फिर सहदेई के रस में ३ दिन खरल करे, फिर आक के दूध में ३ दिन खरल करे, फिर राई के रस में ३ दिन खरल करे फिर चिरचिरे के रस में ३ दिन खरल करे, फिर घीकुवार के रस में ३ दिन खरल करे, फिर बकरी के दूध में ३ दिन

खरल करे, फिर नकछिकनी के रस में ३ दिन खरल करे, फिर नीबू के रस में ३ दिन खरल करे, फिर बड़ के दूध में तीन दिन खरल करे फिर कपड़े में पोटली बाँधकर ७ दिन तक सुखावे फिर दलदार सात हांड़ी मँगवाकर सब दवा की ७ पोटली बनावे और हर एक हांड़ी में पीपल की लकड़ी की राख खूब दाबकर भरे। बीच में राख में भोंडल (अभ्रक) को एक पत्र रखे, उस पर दवा की पोटली रखे फिर उसके ऊपर एक और वही पत्र रखे, फिर ऊपर से पीपल की राख खूब दाब दाबकर हांड़ी के ऊपर तक भर देवे। फिर हांड़ी के मुख पर परिया ढ़ककर गुड़ चूना से सन्धि बन्द कर देवे, फिर चूल्हे पर हांड़ी चढ़ाकर ऊपर सब हांड़ियाँ रख देवे, फिर लकड़ी की आंच ३२ पहर तक इस क्रम से देवे कि, पहले चिराग के मुवाफिक २ पहर तक, फिर मसाल के मुवाफिक ४ पहर तक, फिर उससे दूनी ६ पहर तक, फिर बैंगन के मुवाफिक १२ पहर तक, फिर चिराग के मुवाफिक ८ पहर तक आंच देवे, फिर स्वांगशीतल होने पर उतारे और निकालकर एक शीशी में रख देवे। खुराक दो चावल भर है। पान के साथ खावे तो संसार के सर्व रोगों का अवश्य ही नाश करे।

अन्य विधि

हरताल तवकिया १ तोला लेकर कपड़े में पोटली

बाँधकर गाय के ५ सेर दूध में डोलायंत्र से ४ पहर तक पकावे, फिर निकालकर हल्दी और भिलावां में ४ पहर खरल करे, फिर नकछिकनी के रस में ४ पहर खरल करे, फिर गोभी के रस में ४ पहर खरल करे, फिर पथरचटा के रस में ४ पहर खरल करे, फिर भांगरे के रस में ४ पहर खरल करे, फिर ५ सेर पीपल की अन्तरछाल पीस छानकर चूरन करे और उसमें दो घड़ियां बनावे फिर उसमें उक्त हरताल रखकर उस पर दूसरी घरिया ढककर निस्सन्धि करके ३ कपरौटी करके सुखा लेवे, फिर अँगीठी में जंगली छेना हाथी के पांव के मुवाफिक धरे। बीच में घरिया धरे और आग लगा देवे। जब स्वांगशीतल होवे तब निकालकर शीशी में रख छोड़े। खुराक रत्ती १ है। पान में रखकर खावे तो सर्वरोग नाश करे।

हरताल भस्म से चांदी बनाना

हरताल तवकिया १ तोला, पारा १ तोला इन दोनों को नींबू के रस में ४ पहर खरल करे, फिर गोली बनाकर रखे और पीपल की राख को केला के पानी में माड़कर एक हांड़ी में खूब दाब दाबकर ऊपर तक भरे, बीच में उक्त गोली धरे और हांड़ी का मुख परिया से बंदकर निस्सन्धि कर देवे, फिर कुम्हार के आवाँ के मुवाफिक जंगली छेनों से हँड़िया को छाकर आग देवे, फिर स्वांग शीतल होने पर निकाले तो १ रत्ती खाक १

तोला रांगा को चांदी करे।

अन्य विधि

हरताल तवकिया १ तोला लेकर एक पुराने छेना को खोलकर उसमें धरे, फिर उसमें कुचिला के हरे पत्तों का रस निचोड़े, अगर हरे पत्ते न मिलें तो सूखे पत्तों को पानी में भिगोकर रस निचोड़े, फिर आग लगा देवे। इसी तरह आठ बार या और अधिक जब तक हरताल फूलकर भस्म न हो जावे तब तक करे तो हरताल भस्म होवे, फिर निकाल कर शीशी में रख छोड़े। १ रत्ती खाक १ तोला रांगा को चांदी करे।

हरताल भस्म ५ सेर की भूख करे

हरताल तवकिया २ तोला, पारा २ तोला इन दोनों को १ पहर तक खरल करे, फिर गूमा के रस में १२ पहर खरल करे, फिर सहिंजना की जड़ के रस में १२ पहर खरल करे, फिर मदार के दूध में १२ पहर खरल करे, फिर मकोना के दूध में १२ पहर खरल करे, फिर टिकिया बनाकर १२ पहर तक सुखावे फिर सरवा में रखकर १०१ कपरौटी करे फिर खूब सुखाकर पुरुष बराबर गहरा गढ़ा खोदकर उसमें बहुत सी लकड़ी और छेना भरकर बीच में वह कपरौटी रखे और उसको कुम्हार के आवाँ के मुवाफिक बनाकर आग लगा देवे। स्वांग शीतल होने पर निकाले तो हरताल भस्म होवे। खुराक रत्ती १ है। पान में रखकर खावे तो

पांच सेर की भूख होवे और जब तक जीवे तब तक हरगिज भूख कम न होवे। शरीर में हाथी के समान बल बढ़े। सर्वरोगों का नाश होवे।

हरतालभस्म नामर्दी पर

हरताल तबकिया ५ तोला लेकर खूब बारीक पीस लेवे और सीसा तोला १२॥ लेकर एक बर्तन में रखकर आग देकर पिघलावे जब बिल्कुल पिघलकर पानीसा हो जावे तब उसमें उक्त हरताल को डालकर करछी से चलावे, जब उसमें अग्नि उठे तब तुरंत ही शरफोंका का रस अथवा उसके काढ़ा से बुझा देवे फिर निकालकर रख छोड़े, फिर उसमें से रत्ती १ साथ अजवाइन दो माशा के खावे तो नामर्द मर्द होवे।

तांबा भस्म ५ सेर की भूख करे

तांबा तोले ५ लेकर महीन पत्र करावे, फिर गर्मकर कर गोमूत्र में ७ बार, फिर दही में ७ बार बुझावे, फिर अमली के फूल मँगवाकर एक हांड़ी में भरे और बीच में पत्र की तह लगा देवे, फिर ऊपर से पानी डाल देवे, फिर चूल्हे पर चढ़ाकर १२ पहर की आंच देवे, फिर निकालकर उस पत्र को रेती से रेत डाले और एक कड़ाही में डालकर नींबू के रस से १ पहर खरल करे, फिर पांच तोला पारा मँगाकर कागजी नींबू के रस में २ पहर खरल करे, फिर तांबे में मिला देवे, फिर गन्धक आमलोसार ७ तोला लेकर नींबू के रस में दो पहर

खरल करे; फिर उसकी गोली बनावे, फिर उसके गोली के अन्दर उक्त तांबे की गोली धरे, फिर उसके ऊपर नींबू के रस से ७ कपरौटी करे फिर मिट्टी की एक हँड़िया मँगवाकर उसके बीच में रेत (बालू) भरे, बीच में उक्त कपरौटी धरे, फिर उसको बन्दकर निस्सन्धि करके खूब मजबूत कपरौटी कर देवे फिर सुखाकर भट्ठी पर चढ़ाकर २४ पहर की आंच देवे जब ठण्डा हो जावे तब युक्ति से निकाल कर रख छोड़े, खुराक १ रत्ती है पान में खावे तो सरदी दूर हो, ५ सेर की भूख लगे नामर्द मर्द होवे। कफ, खाँसी, दमा, बात, पित्त के सर्व रोग दूर होवें।

अन्य विधि

तांबा ५ तोला लेकर उसके पत्र करावे, फिर उसको सरसों के तेल में ७ बार बुझावे, फिर नकछिकनी के रस में ७ बार बुझावे, फिर घीकुवार के रंस में ७ बार, फिर मदार के दूध में ७ बार बुझावे फिर अमली के फूलों में १२ पहर औटावे, फिर एक हांड़ी में अमिली की खटाई डालकर उसमें ताँबे को डालकर चूल्हे पर रखकर खूब ही दोपहर तक औटावे, फिर निकालकर रेती से रेत डाले, फिर उसमें ढ़ाई तोला पारा मिलाकर कड़ाही में डालकर नींबू के रस में खूब खरल कर पारा चराय देवे, फिर उसमें एक तोला आमलासार गन्धक डालकर नींबू के रस से खंरल करके

गोली बना लेवे, फिर दो सरवा मिट्टी के लेकर उसमें चौलाई की जड़ पीसकर बिछावे, फिर उसके ऊपर गन्धेले बबूल की जड़ पीसकर लपेटे, फिर चौलाई की जड़ पीसकर सरवा के अन्दर बिछावे और उस पर गन्धक डाले, फिर उस पर उक्त गोली रखे फिर ऊपर से दूसरा सरवा ढककर कपरौटी ७ करे फिर उसको एक चौड़े मुँह की हाँड़ी में रखे फिर उस पर ७ कपरमट्टी करे और उस हांड़ी की पेंदी में एक छेद करे और हांड़ी में बालू भरे बीच में पत्र रखे, और उस हांड़ी के मुहँ पर रकाबी ढककर ७ कपरमट्टी करे फिर सुखाकर भट्टी पर रखकर खूब तेज आग २४ पहर तक देवे फिर स्वांग शीतल होने पर निकाले, तब शुद्ध होवे। फिर अकरकरा, लौंग कुटकी, ये सम भाग लेकर उसमें उक्त तामेश्वर को मिलाकर बँगला पान के रस में खरलकर एक एक रत्ती की गोली बना लेवे, फिर १ या दो गोली रोज खावे तो खांसी, दमा, कफ, आमवात ये अवश्य ही नाश होवें कामदेव बहुत प्रचण्ड होवे।

रुपिया भस्म

रुपिया को रेतकर तेल, मट्ठा, गोमूत्र, कांजी, कुल्थी का काढ़ा, त्रिफला के काढ़ा में सात सात बार बुझाकर शुद्धकर लेवे, फिर एक सरवा में बन्दकर कपरौटी करके गजपुट में फूँक देवे तो रुपिया भस्म होवे।

रूपाशोधन तथा मारन

रूपा २ तोला, जस्ता ६ माशा दोनों को गलाकर नीलाथोथा के पानी में २१ बार बुझावे फिर नींबू के रस में २१ बार फिर गाय के दही में २१ बार फिर खरगोश के मूत में २१ बार बुझावे, फिर तांबे की घग्यिा में रखकर फूँक देवे तो रूपा भस्म होवे, फिर ९९ माशा तांबा गलाकर १ रत्ती उक्त भस्म डाले तो चोखी चांदी हो जावे।

पाराशोधन मारन

भेड़िया की जीभ सुखाकर पारा में मिलाकर खरल करे, फिर अण्डी का रस १० तोला, नींबू का रस १० तोला, भांगरे का रस १० तोला, बकायन का रस १० तोला, नीम का रस १० तोला, काली मकोय का रस १० तोला, काले धतूरे का रस १० तोला इन सबको मिलाकर उसमें उक्त पारा को ४ दिन रात बराबर खरल करे, फिर मनुष्य की खोपड़ी और बिनौला इन दोनों को अलग अलग पीसकर माटी में मिलाकर घग्यिा बनाकर सुखावे, फिर उसमें उक्त पारा रखकर दूसरी घग्यिा से ढककर निस्सन्धि कर जंगली छेना में गजपुट में फूँक देवे स्वांग शीतल होने पर निकाले तो पारा भस्म होवे।

सीसाभस्म

सीसा ५ तोला, मनसिल १ तोला, गन्धक १ तोला,

शीशा के ५ पत्र करावे, फिर मनसिल और गन्धक को एक ही में बारीक पीसकर एक सरवा में थोड़ा सा धरे फिर उक्त सीसे का १ पत्र धरे, फिर उक्त चूरन धरे, फिर पत्र धरे, फिर चूरन धरे, इसी तरह तह दरतह धरे, फिर ऊपर से उक्त चूरन रखकर दूसरा सरवा ढककर निस्सन्धि करके ७ कपरमट्टी करके सुखा लेवे, फिर एक अँगीठे में जंगली छेना रखकर हाथी के पैर के मुवाफिक तह लगाकर उसी के बीच में उक्त कपरौटी रखकर आंच देवे, फिर स्वांग शीतल होने पर निकाले, फिर १ रत्ती खावे तो धातु पुष्ट होवे भूख खूब बढ़े।

सिंगरफभस्म

सिंगरफ ४ तोला, पीपरि ४ तोला इन दोनों को १ पहर खरल करे, फिर काले धतूरे के रस में २१ पहर खरल करे, फिर उसकी टिकिया बनावे और शोधा बच्छनाग माशा ६ पानी में गाढ़ा गाढ़ा पीसकर उन टिकियों पर दोनों तरफ चुपड़ देवे, फिर सुखाकर महीन कपड़े में बांधकर ५ सेर गाय के दूध में हांड़ी में डालकर हाँड़ी पर सरपोश ढककर उड़द के आटा से निस्सन्धि करके चूल्हे पर चढ़ाकर निरंतर ६ पहर की आंच देवे, फिर ठण्डा होने पर पोटली निकाल लेवे और दूध को जमीन खोदकर गाड़ देवे खुराक रत्ती १ है पान के साथ खावे तो शरीर में बहुत बल बढ़े।

अभ्रक भस्म

श्याम अभ्रक लेकर दूध, तेल, कांजी, कुल्थी के काढ़ा में इक्कीस बार बुझावे, फिर शोरा के गरम पानी में एक सौ एक बार बुझावे फिर खरल करके टिकिया बनावे फिर सुखाकर उसके बराबर पारा देवे और दो शराबों के अन्दर रखकर बन्द करके गजपुट में फूँक देवे तो अभ्रक भस्म होवे।

संखिया भस्म

२ तोला संखिया लेकर एक कपड़े में पोटली बाँधे, फिर १ हांड़ी में ५ सेर गदहे का मूत्र और २ सेर थूहर का दूध भरे, फिर डोलायन्त्र से उक्त पोटली लटकाकर चूल्हे पर रखकर मध्यम आंच देवे, जब सब सूख जावे तब पोटली निकाल लेवे फिर १०१ फल इन्द्रायण के मँगवाकर एक फल में उक्त संखिया भरकर दो कपरौटी करके सुखाकर थोड़ी सी उपलों की आंच देवे फिर निकालकर दूसरे फल में रखकर इसी तरह आंच देवे। इसी तरह १०१ फल में भर भरकर आंच देवे तब संखिया भस्म होवे, फिर १ रत्ती १ तोला राँगा को चांदी करे।

पीतल और कांसा भस्म

पीतल १ तोला, कांसा १ तोला लेवे, फिर उसके पत्र बनावे, फिर पारा और गन्धक एक एक तोला लेकर जामुन के रस में खूब खरल करके उक्त पत्रों पर

दोनों तरफ लेप करके सुखाकर दो घरिया के अन्दर रखकर कपरमट्टी करके खूब मजबूत कर गजपुट में फूँक देवे तो भस्म होवे। खुराक १ रत्ती है, पान में खावे तो धातु के सर्व रोग हरे।

त्रिवंग भस्म

रांगा, सीसा, जस्ता ये तीनों एक एक तोला लेकर एक मिट्टी की सनाकी में रखकर आग पर चढ़ावे और नीचे बबूल की लकड़ी जलावे जब सब पिघल कर एक जात हो जावें तब उसमें विसखपरा (साँठी) की जड़ की बकली माशा ८ पीसकर चुटकी से डालता जावे और करछी के डांडे से रगड़ता जावे जब सब फूलकर खील हो जावे तब उतारकर रख छोड़े, फिर १ रत्ती पान में खावे तो धातु के सर्वरोग नाश होवें।

फौलाद भस्म

फौलाद को रेती से रेतकर २ तोला लेवे और २ तोला चूना, मनशिल ६ माशा, कसीस ६ माशा लेवे, फिर मनसिल और कसीस को एक में पीसकर ३ हिस्सा कर लेवे, फिर एक कूजे में पानी भरकर उसमें एक हिस्सा डाले, फिर फौलाद और चूना दोनों को लोहे की कड़ाही में डालकर लोहे के सोंटे से खूब रगड़े और उक्त कूजे का पानी डालता जावे तथा रगड़ता जावे इसी तरह ७ दिन करे, फिर जंगली उपलों की आंच देवे ठण्डा होने पर उतारे फिर उक्त भस्म माशा ४, सोंठि

माशा ४, मिश्री माशा ४ इन सबको एक में मिलाकर २१ खुराक करके १ खुराक गाय के दूध से खावे तो धातु के सर्वरोग नाश होवें।

दवा आधाशीशी

मुरदासिंग औरत के दूध में घिसकर जिस तरफ दर्द न हो उस तरफ के कान में डाले अथवा नौसादर रत्ती ४ पानी में घिसकर नाक के उस तरफ के नथुने में डाले जिस तरफ दर्द न हो। अथवा कागजी नींबू का अर्क दो बूँद जिधर दर्द न हो उस तरफ के नथुने में डाले तो आधाशीशी आराम होवे।

खाँसी की दवा

त्रिफला ६ माशा, सेंधानोन ६ माशा, जवासाकी भस्म ६ माशा लेकर सबको पीस छानकर सोते वक्त ३ माशा खावे अगर सूखी खांसी होवे तो घी में मिश्री मिलाकर खावे अगर बहुत पुरानी खांसी होवे तो आमला, बड़ी पीपरि, सोंठि ये समभाग लेकर पानी से पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर दोनों वक्त खावे अथवा अकरकरा २ तोला, मिर्च २ तोला, कौंछ के बीजों की मींगी २ तोला, हल्दी २ तोला, अदरख ६ माशा, हर्र १ तोला, सज्जी १ तोला, बँगला पान ७ अदद लेवे फिर इन सबको पीस छानकर घीकुआर के रस में खरल करके माशा माशा भर की गोली बनाकर सोते वक्त खावे तो बहुत पुरानी खाँसी

का जड़ से नाश होवे।

नासूर चश्म की दवा

साँप की केंचुली जलाकर लगावें। अथवा गाय के पित्ते में गूगुल को हल करके उसमें महीन कपड़ा भिगोकर रखे और वक्त जरूरत पर नासूर में बत्ती बनाकर लगावे।

कमलवाय की दवा

देवदाली को पानी में घिसकर दो चार बूँद नाक के दोनों नथुनों में डाले तो अति शीघ्र कमलवाय दूर होवे।

आतशक गरमी की दवा

करंज की कोंपल १ तोला, नीम की कोंपल १ तोला इन दोनों को एक छटाँक पानी में पीस छानकर सात दिन तक पीवे और चने की रोटी खावे तो गर्मी दूर होवे। अथवा सफेद कत्था १ तोला, पारा ४ माशा, गुड़ तीन वर्ष का पुराना ३ तोला लेवे फिर इन सबको एक ही में खरल करके चनासम गोली बनाकर १ वक्त सबेरे खावे तो फिरंग गर्मी का नाश होवे।

सफेद कोढ़ की दवा

एक बाम मछली का पेट फाड़कर आलाइश निकाल डाले, फिर उसमें सवातोला पमार के बीज भर देवें, और सत से लपेट देवें फिर ३ दिन तक शदह में डूबा रखें चौथे दिन निकालकर गाय के घी में तल लेवें जब

खूब गर्म हो जावे तब निकालकर ३ भाग करे, फिर १ भाग सबेरे एक दोपहर एक शाम को खावे इसी तरह सात दिन बराबर खावे तो कोढ़ दूर होवे।

अन्य दवा

शरफोंक की जड़ की छाल का चूरन बनाकर दो तोला रोज खावे तो १५ दिन में सफेद कोढ़ अवश्य ही अच्छा होवे परंतु हवा से बचे रहें और चने की रोटी खावे और नमक बिल्कुल न खावें।

अन्य दवा

कलौंजी ९ तोला, बावची ३ तोला, धतूरे के बीज १ तोला मदार के पत्ते ८ अदद लेवे, फिर इन सबको एकत्र पीसकर गोलियां बना रखे और पानी में घिसकर सफेद दाग पर लेप करे तो १५ दिन में सफेद दाग अच्छा होवे। अथवा पीली सरसों आधा सेर, पारा माशा ६ लेवे, फिर इन दोनों को खूब ही खरल करे, फिर भटकटाई के रस से सफेद दाग पर लेप करे तो १५ दिन में सफेद कोढ़ में आराम होवे।

संग्रहणी की दवा

एंक नीबू के दो फांक करके एक फांक में मूँग के बराबर अफीम भरे और दूसरा फांक ऊपर से ढांककर आग पर पकावे फिर ठण्डा करके चूस जावे तो संग्रहणी दूर होवे।

अन्य दवा

अगर खून और कफ आम में लिपटे आते हों तो मोचरस, पोस्त, खसखस ये दोनों सम भाग लेकर आधी कच्ची, आधी पक्की कर लेवे, फिर जली सुपारी ६ माशा, राल सफेद ६ माशा, इन सबको एकत्र पीसकर उसमें शक्कर ६ माशा मिलाकर ताजे पानी से ४ दिन खावे तो लोहू, आम, कफ सब दूर होवे।

अन्य दवा

एक जायफल को थोड़ा कोलकर १ माशा अफीम भरे फिर उसके बराबर सोंठि लेकर दोनों को गाय के घी में पकावे फिर ठंडा करके पीसकर थोड़ा सा शहद मिलाकर चने की समान गोलियां बनाकर एक गोली रोज सवेरे खावे तो घोर संग्रहणी दूर होवे।

जलोदर की दवा

रेवतचीनी का चूरन ४ माशा खावे तो पेशाब बहुत उतरे, जलोदर का नाश होवे। अथवा संज्जी ६ माशा, गेहूँ की मैदा ६ माशा इन दोनों को एक कपड़े में बाँधकर घी में भिगोकर तवा पर गर्म कर पेट सेंके तो जलोदर दूर होवे।

मृगी की दवा

तवकिया हरताल धतूरे के अर्क में घिसकर एक एक कतरा दोनों नथुनों में डाले तो ३ दिन में मृगी मिटे। अथवा अकरकरा १ तोला बारीक पीसकर ४ तोला

शहद मिलाकर उसमें से १ तोला हर रोज खावे तो मृगी दूर होवे।

तर खुजली की दवा

सुर्ख कसीला १ तोला, सुहागा १ तोला, फिटकरी १ तोला लेवे। फिर इन सबको बारीक पीसकर २ तोला सरसों के तेल में मिलाकर तमाम बदन में मलकर नहावे। अथवा २१ बार घी को धोकर उसमें कसीला १ तोला, सफेद कत्था १ तोला, मेहंदी १ तोला, सुहागा ३ माशा, मिर्च १ माशा, मिलाकर लगावे तो खुजली दूर होवे।

झुनझुनी की दवा

सौ वर्ष की पुरानी ईंट पीस छानकर तिल के तेल में मिलाकर मालिश करे और उपलों से सेंके तो हाथ पैरों में चींटियां सी लगना व झरन झरन होना दूर होवे

दमा की दवा

घीगुआर का पट्ठा लेकर छील डाले और उस पर नमक और मिर्च काली बारीक पीसकर बुरक देवे। फिर कबाब की तरह कोयले की आग में लोहे की सलाई में लगाकर भून लेवे, फिर प्रतिदिन खावे तो ७ दिन में दमा दूर होवे मुजर्रिब है।

अन्य दवा

केशर ६ माशा, किशमिश ६ माशा, मिर्च ६ माशा इन सबको पीस छानकर ३ माशे प्रतिदिन खावे तो ७

दिन में दमा दूर होवे।

मूत्रातीसार की दवा

लोबान २ तोला, शहद २ तोला इन दोनों को पीसकर पुराने गुड़ में मिलाकर ३ दिन खावे। अथवा जावित्री माशा १, मिश्री माशा १ इन दोनों को पीसकर खावे तो अधिक व बार बार पेशाब आना बन्द होवे।

मुखदुर्गन्ध की दवा

स्याह जीरा १ तोला अथवा नागरमोथा १ तोला पीस छानकर माशा २ ताजे पानी से खावे तो मुख से बदबू आना दूर होवे।

लकवा की दवा

पानी में हींग घिसकर दो चार बूँद नाक के दोनों नथुनों में डाले तो लकवा आराम होवे।

झांई व छीप की दवा

खड़ी मंसूर कागजी नींबू के रस में पीसकर दोनों गालों पर मले। अथवा मूली के बीज इसी तरह पानी से लगावे तो चेहरे की झांई में आराम होवें।

सिंगरफ भस्म

सिंगरफ १ तोला, सुहागा १ तोला, पारा ६ माशा, गन्धक ६ माशा लेवे, फिर इन सबको बारीक पीसकर मुरगे के अण्डे की सफेदी में ८ पहर तक खरल करे, फिर छाया में सुखाकर एक खाली अण्डे के भीतर

रखकर दूसरे अण्डे से उस अण्डे को ढक देवे अर्थात् सरपोश लगा देवे और निस्सन्धि कर देवे, फिर एक हांड़ी में २॥ सेर ढांक की राख भरे, बीच में वह अण्डा रखे, राख खूब दाब दाबकर हांड़ी के मुख तक भर देवे, फिर हांड़ी पर सरपोश ढककर निस्सन्धि करके कपरमट्टी करके सुखा लेवे, फिर चूल्हे पर रखकर ढाँक की लकड़ी की आँच ४ पहर देवे, स्वांग शीतल होने पर निकाले और शीशी में रख छोड़े, खुराक रत्ती १ है, पान में खावे तो नामर्द भी मर्द होवे।

पारद भस्म

पारा १ तोला, जस्ता १ तोला लेवे। पहले जस्ता को आग पर पिघलावे और एक छोटी कुल्हिया में पारा को रखकर उसी में वह पिघला हुआ जस्ता डालकर उसी वक्त कुल्हिया का मुख ढक देवे, थोड़ी देर में जब दोनों एक जात हो जावें तब कुल्हिया फोड़कर वह थकिया निकाल लेवे, फिर कड़ाही में सज्जी दो सेर पानी में बारीक पीसकर छान देवे और उसी पानी में उक्त थकिया भी डाल देवे और चूल्हे पर चढ़ाकर ढाक की लकड़ी की मध्यम आंच करे जब तमाम पानी जल जावे तब उक्त थकिया मानिन्द खील के फूलकर हो जायगी। खुराक रत्ती १ है। पान में खावे तो नामर्द मर्द होवे।

चौपाये और परिन्दों के पकड़ने की विधि

पारा और हींग इन दोनों को बराबर लेकर थोड़ा

पानी डालकर खूब खरल करे। जब पानी सूख जावे तब शहद डालकर थोड़ा खरल करके उसमें गेंहू भिगो देवे, बाद आठ पहर के निकाल कर छाया में सुखा लेवे, फिर जिस जानवर को पकड़ा चाहे तो थोड़े से गेहूं खाने को डाल देवे। जो जानवर गेहूँ खायगा तुरन्त ही बेहोश हो जावेगा। जब होश में लाना चाहे तो थोड़ा सा घी गाय का खिला देवे। अगर शेर को पकड़ना चाहे तो संखिया, मुर्दासिंग ये दोनों बराबर लेकर खरल करके गोश्त के टुकड़े के ऊपर लगा देवे फिर वही टुकड़ा खाने को देवे ज्यों वह खायगा तुरन्त ही बेहोश होकर गिर पड़ेगा और ८ दिन तक बेहोश पड़ा रहेगा। नवें दिन होश में आवेगा। अगर किसी चिड़िया को पकड़ना चाहे तो मुर्दासिंग खूब बारीक पीसकर आटा में मिलाकर गोलियां बना लेवे फिर जो चिड़ियां इन गोलियों को खायगी, बेहोश हो जावेगी। जब होश में लाना चाहे तब गर्म पानी पिलावे।

गर्भाधान की दवा

मूसली काली, मूसली सफेद, उटंगन के बीज, सेमर के जड़ की बकली, गोखरू इन सबको एक एक तोला लेकर पीस छानकर चूरन करे फिर ऋतुस्नान करके स्त्री पुरुष दोनों प्रतिदिन छै छै पांच दिन तक खावे। पांच बाद दिन के तीन दिन तक रोज मैथुन करे तो गर्भ अवश्य रहे। अथवा केशर २ तोला, गूलर की छाल २

तोला, जायफल २ तोला। पहले गूलर की छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीस लेवे, फिर सब चीजों को एक ही में पीस छानकर चूरन बनावे और ऋतुस्नान के बाद एक चुटकी भर ३ दिन तक खावे। ३ दिन के बाद ३ दिन तक नित्य मैथुन करे तो गर्भ अवश्य रहे। अथवा उक्त रीति से जंगली दूधी का चूरन माशा ४ गाय के दूध से ३ दिन खावे। बाद ३ दिन तक मैथुन करे तो गर्भ अवश्य रहे।

मासिक रुधिर अधिक आने की दवा

अगर मासिक रुधिर अधिक आता हो तो ईसबगोल, शक्कर में मिलाकर सीतल जल या मिश्री के शर्बत से फांके तो खून गिरना अवश्य ही बन्द होवे। अगर किसी का गर्भ गिरता होवे तब भी इसी दवा से अवश्य ही थम जावे।

स्तम्भन की दवा

तमाखू माशा ६, लौंग माशा ६ इन दोनों को पीसकर शहद में चने समान गोलियां बनावे, फिर १ गोली खावे तो स्तम्भन होवे।

हथियारों पर मोरचा न लगने की दवा

मुर्गे का पित्ता लेकर उसमें अण्डी का तेल मिलाकर १० दिन तक बरसते पानी में रखे, फिर हथियारों पर लगावे तो हथियारों में जंग न लगे।

लड़के के मल व मूत्र के गुण

अगर किसी के घर लड़का पैदा हुआ हो और वह तुरन्त ही मूत्र या मल करे तो उसका मूत्र जो मनुष्य अपनी आंखों में अञ्जन करे तो आंखों के सर्व रोग नाश होवें और फिर उमर भर आंखों में कोई रोग न होवें। अगर किसी के आंख के बिन्ने (बरौनी) गिर गये हों तो उक्त मल वहां लगा देवे तो अति शीघ्र बाल जमे और फिर कभी न गिरें।

फीलपाँव की दवा

इतवार या मंगल को मुर्गा हलाल करके उसकी आंखें सूजन पर बांधे तो सूजन मिटे।

औरत का काम बन्द होने की दवा

चीनी कपूर १ तोला, सुहागा १ तोला। इन दोनों को पीसकर पान में रखकर थोड़ा सा खावे तो उस औरत को फिर मर्द की तलाश न होगी।

अंजाल औरत का दवा

पारा माशा ६, चीनी कपूर तोला १, सुहागा तोला १ इन सबको खूब बारीक खरल करके बँगला पान के रस में गोलियां बनावे फिर १ गोली थूक में घिसकर आला तनासुल पर लेप करके मैथुन करे तो औरत तुरंत ही द्रवित होवे।

अन्य दवा

कपूर माशा १, चूना माशा २ इन दोनों को

मिलाकर पान में रखकर खावे तो तुरन्त ही स्त्री स्खलित होवे।

दवा बराय लज्जत तरफैन

मुरदासिंग को काली मुरगी के पित्ते में खूब ही खरल करे फिर आला तनासुल पर लेप करके मैथुन करे तो दोनों तरफ स्तम्भन होवे अति आनन्द आवे।

दवा मर्द बस्तन

एक गिलहरी को पकड़कर इतवार या मंगल को उसकी खाल निकाल लेवे, फिर जिस जगह उसके मर्द ने पेशाब की हो वहां की मिट्टी लेकर उक्त गिलहरी की खाल में भरकर सूत से लपेटकर किसी जगह रख देवे। जब तक उक्त खाल में से वह मिट्टी न निकाली जावेगी तब तक वह मनुष्य दूसरी स्त्री से कदापि मैथुन न कर सकेगा।

गर्भ रहने की दवा

गुलाब के फूल माशा १, गाय का घी माशा २ लेवे, फिर दोनों को खूब रगड़े, जब मुवाफिक काजल के हो जावे, तब ऋतु स्नानकर स्त्री अपनी नाक में डाले। अगर दाहिने नथुने में डाले तो लड़की और बायें नथुने में डाले तो लड़का पैदा होवे। दवा डालकर अपने शौहर से नित्य ३ दिन तक मैथुन करे तो गर्भ अवश्य रहे।

स्त्री के स्तन सूजने की दवा

कुकुरौंधे का अर्क लगावे अथवा इन्द्रायण की जड़

पानी में घिसकर लेप करे तो सूजन व दर्द तुरन्त मिटे।

हाजरात

इस ताबीज को लिखकर बत्ती बनाकर एक नये चिराग में सरसों का तेल डालकर उक्त बत्ती जलावे और उक्त चिराग के पास ८ या १० वर्ष का लड़का या लड़की नहला धुलाकर नये कपड़े पहनाकर बिठा देवे, फिर जो इच्छा होवे सो उससे पूछे खुदा चाहे तो उसमें से आवाज निकलेगी ताबीज यह है देखो–

١١٨١١٤١٩ مم ا ر ا ٥   मुजर्रिब है।

दर्द जह की दवा

यह ताबीज लिखकर देवे और स्त्री अपनी दाहिनी रान पर बांधे तो उसी वक्त प्रसव का दर्द बन्द होवे।

ताबीज यह है देखो–

	٣	٦	٦	٢١	١ ع
٥	١	١٨	١	١٤	٣٢
١					٩
ر	٧	٥	١٣	٢١	١٦
	١	٥	٦	٤	٣

सांप काटे का उपाय

अगर किसी को सांप ने काटा होवे तो ये ताबीज लिखकर उसको पानी में घोलकर खिलावे तो उसी वक्त आराम होवे।

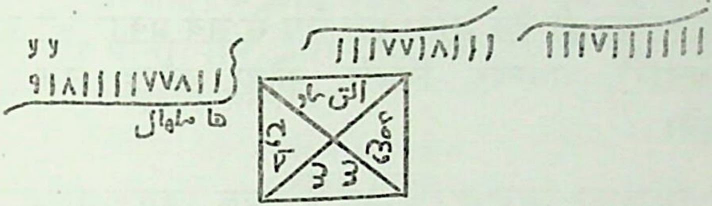

बद की दवा

अण्डे की सफेदी में चूना मिलाकर बद पर लेप करे। अथवा मुर्दा की खोपड़ी पानी में घिसकर गर्म करके लगावे। अथवा ईसबगोल पानी में पीसकर लगावे। अथवा सफेद कत्था, तज कल्मी, सुर्ख कमीला, बबूल का गोंद ये सब छै छै माशा लेकर महीन पीसकर कपड़े के टुकड़े पर लगाकर बद पर लगावे तो बद बैठ जावे। अगर बद को फोड़ना चाहे तो एक अण्डे की जरदी १ तोला, शहद १ तोला, गेहूँ की मैदा इन सबको एक में खूब्र मिलाकर लगावे तो बद फूट जावे। जब फूट जावे तब यह मल्हम लगावे। घी आधा पाव गर्म करे, फिर उसमें देशी मोम २ तोला डाले, फिर सफेद राल ३ तोला पीसकर मिलावे, जब सब एक जात हो जावें तब एक पियाला में रख देवे, फिर उसमें भांगरे का अर्क ४

तोला मिलाकर लगावे। अथवा हालौं, कल्मी तज, अलसी, मेथी, एलुआ ये सब एक एक तोला और साबुन, गूगुल, रेवतचीनी, सज्जी सुर्ख ये छै छै माशा लेवे, फिर इन सबको पीस छानकर पानी में मिलाकर गर्म करके बद पर बांधे ऊपर से बँगला पान बांधे तो बद अवश्य ही बैठ जावे। इस लेप से सर्व प्रकार की गाँठ कखबारी, भगन्दर, गिल्टी, फोड़ा वगैरह सब बैठ जावें।

दवा तेजाब

गन्धक, तूतिया, सुहागा, नौसादर, फिटकरी ये सब दो दो तोला लेवे, फिर खूब बारीक पीसकर आधा पाव दही में मिलाकर एक हांड़ी में रखे, वक्त जरूरत पर एक बूँद फोड़ा पर डाले तो वहां गड़हा कर देवे अर्थात् फोड़ा को तुरंत ही फोड़ देवे।

आतिश गर्मी पर मुंजिश

गुलाब के फूल ३ माशा, मुनक्का दाने ७, सौंफ ६ माशा, सनाय २ माशा, मकोय ६ माशा लेवे, फिर इन सबको पावभर पानी में भिगोकर जोश देवे, जब आधा पानी जल जावे तब मल कर छानकर १ तोला गुलकन्द मिलाकर ३ दिन तक रोज पीवे और आधा पाव घी डालकर खिचड़ी खावे चौथे दिन नीचे लिखा हुआ जुल्लाब देवे।

जुलाब गर्मी पर

शोधे हुए जमालगोटे की मींगी १ तोला, सुहागा कच्चा १ तोला, मुनक्का १ तोला इन सबको बारीक पीसकर माशा माशा भर की गोली बनावे, फिर १ गोली गरम पानी से खावे तो दस्त होवें। जब प्यास लगे तब गर्म पानी पीवे, शाम को खिचड़ी घी दही खावे दूसरे दिन ठंढाई पिलावे।

इल्मगैव का उपाय

अली अकबर कहते हैं कि, जो आदमी इस दुआ को ४० दिन तक प्रतिदिन ७ बार काले भांगरे पर चढ़कर खावे तो इल्म गैब (दूसरे के दिल का हाल) अर्थात् आत्मविद्या जाने। दुआ यह है–बिस्मिल्लाहिर्रहमाने रहीम-अल्ला हुम्मा अन्तल अजीजो व अनज्जलीलो इल्लल् अजीजों यारब्बुविहक्के या जिब्रईलु।

بسم الله الرحمن الرحيم — اللهم انت العزيز وان الزليل الا العزيز يا رب
بحق يا جبرئيل +

बिन्दुकुशाद की दवा

बकरी का दूध १ तोला, ईसबगोल १ तोला इन दोनों को खूब पीसकर पीवे तो बिन्दुकुशाद दूर होवे।

दमा की दवा

मदार के पके हुए पीले पत्ते ११ अदद और चूना कली का १ तोला लेवे, फिर इन दोनों को पीसकर

गोली बनाकर मिट्टी के कूजे में रखकर मुख बन्दकर फूँक देवे, स्वांग शीतल होने पर निकालकर रत्ती १ पान में खावे तो २१ दिन में दमा दूर होवे।

पथरी की दवा

स्याह जीरा १ तोला, गन्धेले बबूल की पत्ती १ तोला, जवाखार १ तोला, सांभरनमक १ तोला, पापड़खार १ तोला, खारी नमक १ तोला, अजवाइन १ तोला इन सबको लहसुन के अर्क में खरल करके जंगली बेर बराबर गोली बनाकर खावे तो पथरी दूर होवे।

बुखार की गोली

सिंगरफ १ तोला, हरताल १ तोला इन दोनों को भांगरे के रस में ४ पहर खरल करके मूँग बराबर गोली बनाकर १ गोली जीरा और मिश्री के साथ खावे तो सर्व प्रकार के जाड़े के ज्वर दूर होवें।

फिरंग गर्मी की दवा

मुर्दासिंग, रसकपूर, कपूर, मैदा लकड़ी, कायफल, पारा, नीलाथोथा, सिंगरफ सफेद कत्था, सुपारी रोहन नीम के पत्ते, पान ये सब एक एक तोला लेकर महीन पीसकर भैंस के मक्खन में मिलाकर कांसे की थाली में डाल कर कांसे के कटोरे से ४ पहर खरल करना फिर रोगी के दोनों हाथों में १ घण्टे तक मले तो गरमी का रोग नाश होवे। अनुपान दही भात खावे।

मल्हम गरमी का

सिंगरफ १ माशा, रसकपूर ३ माशा, मुर्दासंग ३ माशा, रसौंत ३ माशा, अकरकरा २ माशा सफेदा काश्गरी ३ माशा फिर इन सब को खूब बारीक पीसकर गाय का घी या मक्खन २१ बार धोकर उसमें मिलाकर लगावे।

गरमी की दवा

रसकपूर ९ माशा, लौंग २१ अदद, फिलफिल गर्द २१ अदद, अजवाइन खुरासानी १ माशा इन सबको बारीक पीसकर दूध की मलाई में मिलाकर ९ गोलियां बनाकर एक एक गोली हर रोज खावे और खटाई और वादी चीजों से परहेज करे।

अन्य दवा

तूतिया २॥ माशा, हर्र छोटी १ तोला, कत्था सफेद २ तोला, फिलफिल सफेद ७ माशा लेवे, फिर इन सबको दो सेर नींबू के अर्क में खरल करके चना समान गोलियां बनाकर दोनों वक्त खावे तो ७ दिन में गर्मी आराम होवे मगर खटाई व नमक और बादी चीजों से परहेज करे।

अन्य दवा

इलायची छोटी १ तोला, कत्था सफेद १ तोला, तुलसी के पत्ते १ तोला, मुर्दासिंग ६ माशा, गुड़ पुराना १ तोला लेवे फिर इन सबको पीसकर सात गोली

बनाकर हर रोज १ गोली खावे तो गर्मी दूर होवे।

अन्य दवा

शिलाजीत ४ माशा, फिलफिल स्याह ४ माशा, पीली हर्र ४ माशा, आमला ४ माशा, पारा ४ माशा, रसकपूर ४ माशा, सफेद घोंघची ४ माशा, गुलबनप्सा ४ माशा, कत्था सफेद ४ माशा इन सबको खूब बारीक पीस छानकर गुलरोगन में १ घण्टा खरल करके चने के बराबर गोलियां बनावे फिर १ गोली आम के अचार में लपेटकर दोनों वक्त खावे और केवल मसूर की दाल और लाल मिर्चा ये दो चीजें न खावे बाकी सब चीजें खावे तो फिरंग गर्मी अवश्य ही जड़ से नाश होवे।

अन्य दवा

बकरी का गोश्त एक पाव, बड़ी मेढकी १, इन दोनों को पकाकर खावे तो एक ही दिन में असाध्य भी आतशक गर्मी का जड़ से नाश होवे मुजर्रिब है।

काजल सुजाकपर

गाय के बच्चे का सींग रुई में लपेटकर बत्ती बनाकर नये चिराग में अण्डी का तेल डालकर जलावे और काजल पाड़कर सबेरे शाम आंखों में अञ्जन करे तो सुजाक १५ दिन में अवश्य ही अच्छा होवे मगर खट्टी चीजें व बादी से परहेज करे।

गठिया वात की दवा

मुर्दासिंग २ माशा, कंजाकी मींगी ७ माशा, घी २

माशा, चूना ६ माशा लेवे फिर इन सबको बारीक पीसकर पुराना गुड़ मिलाकर माशा माशा भर की गोलियां बनाकर १ गोली रोज खावे तो गठिया बात ७ दिन में अच्छी होवे।

धातु दोष की दवा

मेहँदी २ तोला लेकर सबेरे आधा पाव पानी में बाँट छानकर पीवे। अथवा २१ बादाम की मींगी पानी में पीसकर शहद मिलाकर १५ दिन पीवे तो धातु के सर्वरोग नाश होवें।

दवा जिरियानमनी

तालमखाना एक छटांक, ईसबगोल एक छटांक लेवे, फिर इन दोनों को एक नारियल के गोला में भरकर उसमें बड़ का दूध भर देवे और छाया में सुखावे, फिर चालीस छुहारे लेकर उनकी गुठली निकाल डाले और उनके भीतर उक्त दवा को भरकर उन पर कच्चा सूत लपेटकर एक कड़ाही में गाय का दूध डालकर यह छुहारे खूब तल लेवे। जब थोड़ा दूध रह जावे तब छुहारे निकालकर रख छोड़े फिर १ छुहारा हररोज सबेरे खावे। ऊपर से दूध पीवे तो सर्व प्रमेह नाश होवे।

आंख दर्द पर पोटली

घीकुवार का गूदा १ माशा, अफीम १ माशा: इन दोनो को एक जगह पीसकर पोटली बांधकर पानी में तर करके आंख पर फेरे और दो बूँद आंख में भी डाले

तो दर्द उसी वक्त बन्द होवे।

अन्य पोटली

लोध १ माशा, भुनी फिटकरी १ माशा, अफीम ४ रत्ती, इमली की पत्ती ४ माशा लेवे, फिर इन सबको बारीक पीसकर पोटली बनाकर आंख पर फेरे और दो बूँद आंख में भी डाले तो दर्द उसी वक्त दूर होवे।

अन्य पोटली

इमली के पत्ते, सिरसे के पत्ते, हल्दी भुनी फिटकरी, ये सब एक एक माशा लेकर बारीक पीसकर कपड़े में पोटली बनाकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरे और दो बूँद आंख के अन्दर भी डाले तो दर्द उसी वक्त अच्छा होवे।

अन्य पोटली

कर्पूर ९ माशा, लोध ३ माशा। इन दोनों को पीसकर पोटली बनाकर पानी में २ घड़ी तक तर करके आंख पर फेरे और दो बूँद आंख में भी डाले तो दर्द तुरन्त दूर होवे।

अन्य पोटली

लोध ४ रत्ती, भुनी फिटकरी ४ रत्ती, मुर्दासिंग ४ रत्ती, हल्दी ४ रत्ती, सफेद जीरा ४ रत्ती, अफीम ४ रत्ती, चना ४ रत्ती, मिर्च काली नग ४, तूतिया १ रत्ती लेवे, फिर इन सबको पीसकर उक्त रीति से पोटली बनाकर पानी में तर करके आंख पर फेरे तो दर्द तुरन्त

दूर होवे।

अन्य पोटली

हर्र छोटी, बहेड़ा, आमला, रसौंत गेरू इमली की पत्ती, अफीम, भुनी फिटकरी, सफेद जीरा इन सबको एक एक माशा लेकर बारीक पीसकर कपड़े में रखकर पोटली बनाकर गुलाब जल अथवा पानी में तर करके आंख पर फेरे तो दर्द, सूजन, लाली, कड़क तुरन्त ही दूर होवे।

अन्य पोटली

सफेद जीरा, लोध भुनी फिटकरी, घीकुवार का गूदा, इन सबको एक एक माशा लेकर पीसकर पोटली बनाकर पानी में तर करके आंख पर फेरे तो तुरन्त ही दर्द बन्द होवे।

अन्य पोटली

अफीम १ माशा, भुनी फिटकरी २ माशा, अमली की पत्ती १० माशा लेवे, फिर सबको पीसकर पोटली बनाकर पानी में तर करके आंख पर फेरे और दो बूँद आँख में भी डाले तो दर्द उसी वक़्त बन्द होवे।

अन्य पोटली

भुनी फिटकरी १ माशा, अलसी २ माशा, इन दोनों को बिना पीसे (साबुत) ही पोटली में बांधकर पानी में तर करके आंख पर फेरे तो तुरन्त ही दर्द बन्द होवे।

आंख की दवा

जिस दिन आंख दर्द करे उसी दिन धतूरे के पत्तों का अर्क थोड़ा गुनगुना करके कान में डाले अथवा नीम की कोंपल का अर्क उसी तरह से डाले। अगर बाईं आँख में दर्द हो तो दाहिने कान में डाले, अगर दोनों आंखों में दर्द हो तो दोनों कानों में डाले। अथवा घीकुवार का गूंदा निचोड़ कर दो चार बूँद रात के वक्त आंख में डाले अथवा उक्त प्रकार दो चार बूँद गोंदनी के पत्ते का अर्क रात को आंख में डाले।

आंख दर्द पर लेप

नींबू का अर्क लोहे की कड़ाही में डालकर लोहे के मूसरा से खूब रगड़े, जब स्याह हो जावे, तब गुनगुना करके आंख के पलकों पर लेप करे तो दर्द उसी वक्त दूर होवे।

अन्य लेप

पठानी लोध, आमला इनको सम भाग लेकर गाय के घी में खूब तलकर ठण्डे पानी में पीसकर पलकों पर लेप करे तो दर्द तुरन्त ही अच्छा होवे।

अन्य लेप

बड़ी हर्र, गेरू, रसौंत, छोटी हर्र इनको सम भाग लेकर पानी से महीन पीसकर पलकों पर लेप करे तो दर्द उसी वक्त दूर होवे।

अन्य लेप

अमली की पत्ती का स्वरस १ माशा, अफीम ३ रत्ती, भुनी फिटकरी ५ रत्ती। इन सबको एक लोहे की करछी पर एक में मिलाकर आग में पकाकर पलकों पर लेप करे तो दर्द तुरन्त अच्छा होवे।

आंख के फूला की दवा

बड़ का दूध आंख में लगावे। अगर और भी उत्तमता चाहे तो उसमें थोड़ा सा कपूर भी मिला लेवे, इसके लगाने से जाला, फूली वगैरह आंखों के सर्वरोग नाश हो जाते हैं।

रतौंधी की दवा

मिर्च, कमीला, पीपरि ये सम भाग लेकर बारीक पीसकर आँख में लगावे। अथवा छोटी हर्र, सोंठि, मिर्च ये सम भाग लेकर पीसकर गोली बनाकर पानी में घिसकर आंख में लगावे अथवा पियाज का अर्क लगावे अथवा सिरस के पत्तों का अर्क लगावे अथवा समुन्दर फल को बकरी के मूत्र में घिसकर लगावे अथवा नमक लाहौरी की सलाई बनाकर आँख में फेरे अथवा गदहे का खून लगावे। अथवा आदमी के कान का मैल और बड़ी हर्र पीसकर गोलियां बनाकर पानी में घिसकर आँख में लगावे तो रतौंधी दूर होवे।

बम्हनी की दवा

रुई की बत्ती बनाकर मदार के दूध में भिगोकर

छाया में सुखा ले, फिर तिलके तेल में काजल पारे और गरम गरम आँख में लगावे। अथवा धतूरे और घमरा के रस में रुई को भिगोकर सुखावे, फिर तिल के तेल में काजल पाड़कर बासी पानी में मिलाकर आंख में लगावे तो बम्हनी का नाश होवे। अथवा मदार की जड़ जलाकर कोयला करें, फिर पानी में वह कोयला पीसकर पलकों पर लेप करे तो आंख की खुजली लाली और पलकों की सूजन दूर होवे। अथवा विषखपरे की जड़ छाया में सुखाकर पानी में घिसकर आंख में लगावे।

नजले की दवा

निर्मली को शहद में घिसकर आंख में लगावे तो नजला दूर होवे। अथवा नौसादर को बारीक पीसकर आंख में अंजन करे तो नजला व १ साल का मोतियाबिन्दु दूर होवे। अथवा सफेद घोंघची का अर्क नीबू के अर्क में मिलाकर सबेरे के वक्त आँख में लगावे। अथवा अमली के पत्तों का स्वरस कांसे के कटोरे में डालकर नीम के सोटे से जिसमें पैसा जड़ा हो घोटे फिर उसमें लड़के की माँ का दूध उतना ही डालकर ४ पहर तक खूब रगड़े, जब गाढ़ा हो जावे तब स्त्री के दूध में घिसकर आँख में लगावे। अथवा निर्मली, हींग, फिटकरी, सफेद संग, मिश्री, तूतिया इन सबको बराबर लेकर ८ सेर दही में खूब खरल करे, फिर गोली बनाकर

औरत के दूध में घिसकर लगावे तो बम्हनी, जाला, फूला, दर्द, वगैरह सब दूर होवें।

मोतियाबिन्दु की दवा

दो नींबू का अर्क लेकर ४ तोले गाय के मक्खन में खूब मलकर उसमें थोड़ा सा पानी डालकर दो रात दिन रख देवे, फिर मक्खन को पानी से धोवे, इसी तरह २५ बार करे, फिर चीनी या शीशा के बरतन में रख छोड़े और आंख में लगावे तो मोतियाबिन्दु दूर होवे।

नासूर की दवा

समुन्दरशोख पानी में पीसकर बत्ती बनाकर नासूर में प्रवेश करे तो नासूर अच्छा होवे।

कान के सर्व रोगों की दवा

लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में जोश देकर दो तीन कतरे कान में टपकावे अथवा ऊंट का मूत्र गर्म करके कान में डाले। अथवा काले रंग की कलोरी गाय का मूत्र आग में पकावे जब थोड़ा रह जावे तब शीशी में रख छोड़े, फिर २।। कतरे रोज कान में डाला करे। अथवा पियाज का अर्क गरम करके कान में डाले। अथवा इन्द्रायण का हरा फल तिल के तेल में जोश देकर दो तीन बूँद कान में डाले। अथवा पापड़ खार सिरका में खरल करके छानकर दो तीन बूँद कान में डाले तो दर्द व आवाज साँय साँय होना व बहना व कम सुनना इतने रोग अवश्य ही दूर होवें।

जीर्णज्वर की दवा

अजवाइन माशा ६ रात को मिट्टी के गड़गे में भिगो देवे, सबेरे पानी निकालकर अजवाइन को धीरे धीरे रगड़कर उसके भीतर की गिरी निकाल कर खूब बारीक पीसकर शर्बत बनावे, फिर गिलोय माशा ३, कालीमिर्च माशा ३ इन दोनों को खूब बारीक पीसकर उक्त शर्बत में मिलावे, फिर उसमें शहद १ तोला डालकर पी जावे इसी तरह ७ या १५ या २१ दिन पीवे तो जीर्ण ज्वर अवश्य ही दूर होवे, मगर खट्टी वा बादी चीजों से परहेज करे।

आंख के फूला व जाला की दवा

मनुष्य का मूत्र १ घड़ा भर जमा करके लकड़ी की आग से धीरे धीरे जलावे, जब सब जल जावे तब उतारकर उस बर्तन में जो खार चिपटा होवे उसे खरोंचकर कांसे के कटोरे में डालकर पुरानी नीम की जड़ में एक पैसा जड़वाकर सोंटा बनाकर उससे ३ दिन तक खूब घोटे, फिर निकालकर एक शीशी में रख छोड़े फिर नित्य आंखों में अंजन किया करे तो बहुत पुरानी भी फूली शीघ्र ही कटे।

बवासीर की दवा

नीलाथोथा १ तोला पीसकर एक हांड़ी में पानी भरकर उसी में डाल देवे, फिर उसी से आबदस्त लिया करे। अथवा मुर्गी के अण्डे की जरदी निकालकर

बवासीर पर बांधे। अथवा दही को कपड़े में रखकर उसका पानी निचोड़ डाले, फिर उस दही में तीन चार बूँद भिलावा का तेल डालकर बवासीर वाले को ३ दिन तक खिलावे। अथवा स्याह धतूरे की जड़ पानी में घिसकर ३ दिन तक पीवे और खट्टी व बादी चीजों से परहेज करे। अथवा स्याह धतूरे की जड़, शक्कर घी इनको एक में मिलाकर बवासीर पर ३ दिन तक टिकिया बांधे। अथवा हाथी के नख की धूनी ३ बार देवे तो बवासीर के मस्से गिर जावें। अथवा जंगार को खूब बारीक खरल करके कपड़े की बत्ती या पट्टी पर लगाकर बत्ती या पट्टी चढ़ावे तो सर्व मस्से गिर जावें बवासीर दूर होवे।

सोना बनाना

तांबे के मोटे पैसे ४ काले घमराका स्वरस १०० तोला लेवे पहिले एक खपरे पर आग के ऊपर पैसा रखकर खूब तपावे और एक कपड़े से उसके ऊपर घमराका रस थोड़ा थोड़ा चुवाता जावे आँच धीमी करे जब तमाम अर्क उसमें आमेज हो जावे तब उतार लेवे, फिर हींगनका लकड़ा सवा हाथ का लेकर एक सिरे से कुलावे और उसमें उक्त पैसे रखकर उसी लकड़ी के बुरादे से भरकर अरने छेने की आंच से गजपुट में फूँक देवे सबेरे के वक्त स्वांग शीतल होने पर कुछ दान पुण्य करके निकाले तो वह् पैसा बतौर बताशे के फ़ूल जावेंगे

बस यही तांबा की सफेद भस्म तैयार हुई इसको हिफाजत से शीशी में रख छोड़े, फिर ताँबा गलाकर उससें थोड़ा सा डाले तो सोना बने मुजर्रिब है।

दमा की दवा

कटाई १० तोला, थूहर का डंडा ५ तोला, बकरी का मूत्र ५ तोला, खारी नमक २ तोला, हल्दी २ तोला इन सबको खरल करके गोला बनाकर एक छोटे कूजे में रखकर कपरमट्टी करके जंगली छाना में फूँक देवे, फिर निकालकर शीशी में रख छोड़े और रत्ती रत्ती शहद और पान के अर्क में १४ दिन तक खावे मग़र खट्टी और बादी चीजों से परहेज रखे तो कफ, खांसी, दमा, अवश्य ही आराम होवे मुजर्रिब है।

जीर्णज्वर की दवा

गुलबनप्सा ४ माशा, गुलगाव जवां ४ माशा, गलनीलोफर ६ माशा, गुलखतमी ४ माशा, तुख्म खुरफा ६ माशा, तुख्म काहू ६ माशा, तुख्म कासनी ४ माशा, अंजीर ४ दाने, उन्नाब ५ दाने, मुनक्का ७ दाने, सिपिस्तां ५ दाने, हरी गिलोय ४ माशा, शक्कर ३ तोला, सौंफ ४ माशा, खूबकलां ४ माशा लेवे प्रथम शक्कर और खूबकलां को छोड़कर बाकी सब चीजों को जब कूटकर के एक मिट्टी के कमण्डले में रात भर भिगोदे, सबेरे मिट्टी के बर्तन में आधा सेर पानी में काढ़ा करे, जब आधा पाव पानी शेष रहे तब उतारकर

मलकर छाने और शक्कर डाल ले, फिर खूब कलां को एक कपड़े में पोटली बांधकर ३ रात दिन कुयें में डूबा रखे चौथे दिन निकालकर थाली में डालकर खूब धोवे, फिर छाया में सुखाकर रख छोड़े उसी खूबकलां में से माशा ३ फांककर ऊपर से उक्त शर्बत पी जावे तो जीर्णज्वर तपेदिक अवश्य ही आराम होवे ११ दिन या २१ दिन या ४० दिन तक पीवे जैसी पुरानी बीमारी हो उतने ही अधिक दिन पीवे इससे दस्त साफ होता है, भूख बढ़ती है, खून पैदा होता है यह अनेक बार का मुजर्रिब व मशहूर मौलाना साहब हकीम नागपुर के मतबका नुस्खा है यह १ खुराक है शाम को उसी का खोझट उबालकर पीना चाहिए।

खिजाब की दवा

मुर्दासिंग १ छटांक, संगजराहत १ छटांक, चूना २ तोले लेवे, फिर सबको खरल करके बालों पर लेप करे और पान या अरंड का पत्ता बांधे बाद १ पहर के खोल डाले और तुरंत ही तेल लगा देवे तो बाल स्याह हो जावेंगे।

कोढ़ की दवा

मदार की जड़ की बकली ४ औंस ८० ग्रेन, संखिया ५५ ग्रेन मिर्च काली ९ औंस लेवे, फिर इन सबको खूब बारीक पीसकर पानी से आठ सौ गोलियां बनाकर छाया में सुखा लेवे फिर १ गोली दिन में खाना खाने के

बाद और १ गोली रात को खाना खाने के बाद खिलावे और गर्जन आइलका मलना और पिलाना बहुत लाभदायक है यह नामी हकीम असगर हुसेन साहब फर्रुखाबादी का मुजर्रिब नुस्खा है।

कृमिनाशक दवा

सेन्टोनाइन १ ग्रेन, १ माशा शक्कर में मिलाकर लड़के को खिलावे, इसकी दो ही खुराक खाने से पेट के सब कृमि बाहर निकल आते हैं।

लेमोनेट विधि

असेंस आफ लेमुन ?।। औंस, टारटरिक एसिड ४ औंस, शक्कर १ पौण्ड, सोड़ा वाईकार्व ४ औंस लेवे फिर इन सबको एक में पीसकर एक शीशी में रख छोड़ो, फिर एक पाव पानी में एक चम्मच डाल दो बस उम्दा लेमोनेट बन गया यह हाज्मा करता भूख बढ़ाता प्यास व वमन को दूर करता है।

खुजली की दवा

नींबू के रस में हरताल को घोटकर खाज में लगा दो दो तीन बार के लगाने से खाज आराम हो जावेगी।

दाद की दवा

सुहागा कच्चा, भुनी फिटकरी, आमलासार गन्धक, ये तीनों चीजें पीसकर थोड़ी सी शक्कर मिलाकर घोटकर दाद को खुजलाकर लगा दो और ५ मिनट तक अंगुली से दाद पर खूब ही दवा रगड़ते रहो तो १ ही

बार में दाद बिल्कुल अच्छा हो जावेगा। यह दवा लगती नहीं है।

तिल्ली की दवा

पक्के केले के भीतर पहिले दिन १, दूसरे दिन २, तीसरे दिन ३ जुगनू खावे, इसी तरह ७ दिन खावे तो तिल्ली दूर होवे। अथवा मिर्च १ तोला किशमिश १ तोला शक्कर १ तोला, हींग ३ माशा लेवे, फिर इन सबको पानी के साथ बांटकर मटर के बराबर गोली बनावे फिर २ गोली प्रतिदिन निराहार मुहँ खावे तो बहुत दिन की पुरानी तिल्ली भी दस्त लगकर आराम हो जाती है।

अन्य दवा

फेरिएट थीनी साइट्रास ५ ग्रेन दिन में दो तीन बार खाने से तिल्ली आराम हो जाती है।

आमाशय की दवा

चूने के पानी के साथ हल्दी का चूर्ण मिलाकर रात को सोने से पहिले खाना चाहिये।

पेट फूलने की दवा

पन्द्रह बीस मिर्च अधकुटी करके मिश्री मिलाकर फांक लेओ।

जले की दवा

नारियल के तेल में चूने का पानी मिलाकर जली हुई जगह पर लगा दो जलन तुरंत ही बन्द होवे।

दांतों के दर्द की दवा

किरिया जूट १ भाग, स्पिरिट १० भाग इन दोनों को मिलाकर दर्द की जगह पर लगाओ तो दांतों की टीस व दर्द लगाते ही दूर होवे। अथवा ताम्बूल दाना चबाने से भी दर्द मिट जाता है। अथवा कपूर और अफीम मिलाकर लगाने से उसी वक्त दर्द दूर हो जाता है।

खांसी की दवा

कपूर, एक्सट्राक्ट हाइसाइमस की गोली बनाकर दिन में ३ बार खावे तो खाँसी दूर होवे।

खिजाब की दवा

मुर्दासिंग २ भाग, ताजा सूखा चूना १ भाग, खड़िया २ भाग लेवे, फिर इन तीनों को खूब अच्छी तरह पीसकर पानी मिलाकर बालों पर लगा दो फिर दो घण्टे बाद धो डालो और तेल लगा दो तो सफेद बाल काले हो जावेंगे।

लोम नाशक

सोड़ा ३ भाग सूखा चूना १० भाग, आरारोट १० भाग इन सबको खूब बारीक पीसकर पानी में सानकर बालों पर लगा दो और बाद ३ मिनिट के कपड़े से पोंछ डालो तो सर्व बाल गिर जावेंगे।

अन्य दवा

फेरी सल्फास ८ औंम आरारोट १ सेर इन दोनों को

पीसकर पानी मिलाकर बालों पर लगा दो और ५ मिनिट में धो डालो तो सर्व बाल गिर जावेंगे।

खांसी व दमा की दवा

शहद में मिश्री मिलाकर दिया की ज्योति पर थोड़ा गर्म करके दिन में तीन बार खाओ और काडलिवर आइल छाती और बगल में मालिश करो तो खांसी व दमा दूर होवे। अगर छोटे लड़कों को खांसी आती हो तो तुलसी के पत्तों के स्वरस में शहद मिलाकर चटाओ।

दर्द की दवा

सेंधे नमक को पीसकर एक कपड़े में पोटली बांधकर गर्म तवा पर बार बार रखकर दर्दकी जगह सेंके तो सर्वप्रकार के शरीर का दर्द अवश्य ही अच्छा होवे।

हिचकी की दवा

अनन्नास के पत्ते का रस १ तोला में थोड़ी सी शक्कर मिलाकर खाओ तो हिचकी दूर होवे।

हैजे की दवा

उजाली की जड़ एक छटाँक लेकर दो सेर पानी में काढ़ा करे, जब एक पाव पानी रहे तब रात को पिलावे तो सबेरे हैज (मासिक रुधिर) रुका हुआ जारी हो जावेगा।

संखिया भस्म

एक पाव अमरबेल लेकर एक हांड़ी में डालकर थोड़े पानी के साथ आग पर चुरावे, जब चुरने लगे तब उसमें

आधी छटाँक शोरा कल्मी डाले जब गल जावे तब उतार लेवे, फिर दो ईंटें मोटी और खूब पकी हुई लेकर दोनों में एक रुपिया बराबर गहरा गढ़ा करे, फिर पत्थर पर घिसकर दोनों ईंटों का मुख खूब मिला दे ऐसा कि कहीं पर सांस न रहे, फिर १ तोला संखिया लेकर दोलायंत्र से चार पहर गोमूत्र में शुद्ध करके निकाल ले फिर उसी ईंट के गड़हे में अमरबेल रखकर उस पर १ तोला संखिया रखें, फिर ऊपर से और थोड़ी अमरबेल रखकर दूसरी ईंट से ढककर लोहे के तार से खूब मजबूत दोनों ईंटों को बांध देवे और गुड़ व चूना से निस्सन्धि करके तीन कपरौटी करके सुखा लेवे, फिर जंगली छेना से गजपुट में फूँक देवे स्वांग शीतल होने पर निकालकर शीशी में रख छोड़े। खुराक १ चावल भर है पान में खावे तो पांच सेर की भूख लगे, सर्वधातु रोग दूर होवें सुस्ती व नामर्दी दूर होवे और भी अनेक गुण करे।

बालरोग नाशक धूप

सांप की केंचुली, सरसों, नीम के पत्ते, तेजबल, दालचीनी, वच, लहसुन, हींग, बकरी के रोम काकड़ा-सिंगी, मिर्च, शहद इन सबको सम भाग लेकर एकत्र मिलाकर धूप देने से बालक की सर्व प्रकार की गृह की बाधा सम्बन्धी सर्वरोग और सर्वज्वर दूर हो जाते हैं।

अन्य धूप

शहद नीम के पत्ते, सफेद सरसों ये सम भाग लेकर इनकी धूप बनाकर देने से अथवा मरी हुई गाय के कोखि के रोमों की धूनी देने से बालकों की सर्व प्रकार की गृह पीड़ा व सर्वज्वर अवश्य ही शांत हो जाते हैं।

पलंकषादि धूप

गूगुल, बच, कूठ, हाथी का चाम, भेड़ का चाम नीम के पत्ते शहद, घी ये सब समभाग लेकर कूटकर धूप देने से विशेषकर बालकों का ज्वर अति शीघ्र दूर हो जाता है।

बालक के रात्रि रोदनपर धूप

छछून्दर की विष्ठा, उड़द, हल्दी बेल के पत्ते, इन्द्रयव, सिरस के पत्ते ये समभाग लेकर इनकी धूप देने से बालकों का रात्रि में रोना दूर होता है।

बालक की कृशता की दवा

अगर १ वर्ष से अधिक का बालक हो गया होवे और सब यत्न करने पर सूखता ही जावे केवल अस्थिमात्र शेष रह जावें और मन्दाग्नि, मल, मूत्र की अधिक प्रवृत्ति होय ऐसे स्थिर महारोगी बालक को प्रथम मृदु शोधन कराकर पश्चात् बस्ति द्वारा पीपल और हड़संहारी का चूरन तथा दूध और मांस का प्रयोग करे तो बालक आराम होवे।

बलवर्द्धक दवा

टिंचर नक्स वोमिका ५ बूँद, टिंचर फेरी पर क्लोराइड १० बूँद इन दोनों को आधी छटांक ताजे पानी में मिलाकर देवे यह १ खुराक है इसी तरह दिन भर में ३ खुराक तक देवे अगर इस दवा को और अधिक तेज किया चाहे तो उसमें टिंचर हाइसामस १० बूँद और टिंचर डेजीटेलिस १० बूंद और मिला देवे यह दवा ७ दिन में अपना पूर्ण चमत्कार दिखाती है। दस्त साफ होता है भूख बढ़ती है। कफ, खांसी, दमा कम हो जाता है। शरीर में बल बढ़ता है।

कफ व दमा की दवा

कुचिला माशा १, जायफल माशा ८ इन दोनों को पीसकर मूँग बराबर गोलियां बना लेवे फिर १ गोली सबेरे १ शाम को खावे तो कफ व दमा व खांसी दूर होवे। अगर कुछ दिन तक इस दवा का सेवन करे तो अफीम खाना अवश्य ही छूट जावे।

पुरानी खांसी की दवा

वाइनम इपीका १ औंस, म्यूसिलेज एकाशिया दो ड्राम ठण्डा पानी १ औंस ये सब एक बोतल में भरकर डाट लगा दो खुराक १ तोले से २ तोले तक है इस दवा से बहुत पुरानी खांसी भी आराम हो जाती है।

निमोनियां की दवा

कारवोनेट आफ एमोनियां २० ग्रेन टिंचर एको-

नाइट ३० बूँद, टिंचर सिनकोना ३ ड्राम और पिपर-मिन्ट वाटर इतना मिलाओ कि, सब ५ औंस हो जावे, फिर १ बोतल में सबको भरकर डाट लगा दो खुराक १ औंस है दिन भर में ३ बार देवे इससे निमोनियां अवश्य ही आराम हो जावेगा।

मिरगी की दवा

टिंचर ऐसाफीटेडा २० टीपा, कारबोनेट आफ एमोनियां २ ग्रेन यह सब एक खुराक हुई। दिन भर में दो खुराक देना चाहिये इसको कुछ दिन तक सेवन करने से मिरगी अवश्य ही दूर हो जाती है।

हैजे की दवा

अफीम आधा ग्रेन, लाल मिर्चा आधा ग्रेन, भुनी हींग डेढ़ ग्रेन, कपूर आधा ग्रेन, बबूल के गोंद से गोली बना लो फिर १ गोली दो दो या तीन तीन या चार चार घण्टे बाद देओ मगर ४ खुराक से अधिक न देओ इससे हैजा अवश्य ही अच्छा हो जावेगा।

दाद की दवा

रस कपूर ६ ग्रेन, सादा मल्हम १ औंस, ये दोनों मिलाकर दो तीन बार के लगाने से बिना दर्द तकलीफ के दाद अवश्य ही अच्छा हो जाता है।

खाज की दवा

सबलाइमेन्ट सल्फर २ ड्राम, कारवोनेट आफ पुटास आधा ड्राम, सादा मल्हम १ औंस इन सबको मिलाकर

दो तीन बार के लगाने से खाज अच्छी हो जाती है।

सिर दर्द की दवा

कारवोनेट आफ एमोनियां सूंघने से सिर का दर्द उसी वक्त अच्छा होता है।

जलोदर की दवा

शोधा जमालगोटा, छोटी हर्र, काली मिर्च, ये सब सम भाग लेकर पीसकर काली मिर्च के बराबर गोली बनाकर दिन भर में २ या ३ बार तक खावे तो जलोदर का नाश होवे।

दर्द का उपाय

अगर सिर में या पेट में दर्द हो तो यह ताबीज लिखकर गले में बांधे तो दर्द अवश्य ही अच्छा होवे ताबीज यह है,

अलगयासु या नवी   الغياث يا نبي ×

प्रेम बढ़ाने का उपाय

यह ताबीज एक शंबा को लिखकर आग में जलावे तो मोहब्बत बहुत ज्यादा बढ़े।

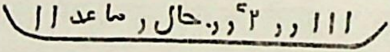

अन्य उपाय

नेक साइत में यह ताबीज लिखकर बत्ती बना कर जलावे तो मोहब्बत बहुत ज्यादा होवे

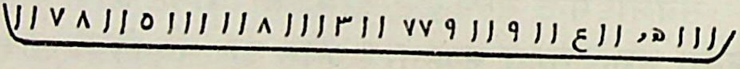

खटमल दूर करने की दवा

किरोसिन तेल अथवा तूतिया के पानी से खटमल भाग जाते हैं। तारपीन तेल के जलाने से जो धुआँ निकलता है उससे और कपूर की सुगन्ध से और भाँग के धुआँ से भी खटमल मर जाते हैं। कपूर कपड़ों में रखने से अथवा स्पिरिट आफ नैपथा जहाँ खटमल हों वहां लगा देने से सब खटमल मर जाते हैं। चारपाई या कुर्सी वगैरह् में नैपथलीन पिल्स सात आठ दिन रखने से सब खटमल दूर हो जाते हैं। नरकुल या अमिलतास की छियां चारपाई में बांध देने से सब खटमल भाग जाते हैं।

नारियल का तेल सुगन्धित करना

नारियल का तेल १ सेर, चन्दन का तेल २ तोला, तेजपात वगैरह् सुगन्धित मसाला आधा पाव, छार छबीला आधा पाव, गुलाब के सूखे पत्ते आधा पाव, हिना का अतर २ तोले, पहिले नारियल के तेल में तेजपात मसाला, छारछबीला गुलाब के फूल मिलाकर १५ दिन भिगो रखो, जब देखो कि तेल में बू नहीं आती तब इत्र हिना और चन्दन का तेल मिला दो और तेल में रंग देने के लिये अलकोनेट रूट पीसकर मिला दो फिर फलालैन या ब्लाटिंं पेपर से छान लेओ।

सादा साबुन बनाना

सज्जी मिट्टी नारियल का तेल एक एक सेर लेकर

उसमें कलई चूना आधा सेर मिलाकर पानी डालकर कड़ाही में आग पर पकावे जब पकते पकते गाढ़ा हो जावे तब उतारकर सांचे में ढाल दे अगर रंगदार या खुशबूदार करना हो तो उसी समय रंग और खुशबू किवाम में मिला देवें।

अंग्रेजी स्याही बनाना

माजूफल १ सेर, गोंद १ पाव, हीरा कसीस १ पाव, वकुमकाष्ठ १ पाव, पानी आधा मन लेवे पहिले माजूफल और वकुमकाष्ठ को १ घण्टे तक पानी में खूब खौलाओ, फिर उसमें गोंद डालो फिर हीरा कसीस पीसकर डालो बस स्याही तैयार हो जायगी।

पारा की गोली बनाना

रामपत्री, लाल गमीला, सगोनियां बूटी, भमरमार बूटी, मरहटी बूटी, काला धतूरा, श्यामा तुलसी, जंगली धनियां, सत्यानाशी कटेरी, मूसा करणी, जल नीम, सफेद पांगरा, काला ककोड़ा, लज्जावन्ती, पीले फूल की नकछिकनी, पीले फूल का हुलहुल, जंगली कपास, जंगली, लोनियां लाल चित्रक, शमी, कुचिला का पत्ता, शिवलिंगी, कुमारकांडा, ब्रह्मदंडी, दमजरी बूटी, बड़ का दूध, उदुम्बर का दूध, तिधारे का दूध, चौधारा, बन अलसी, हंसपगी, कोकिला बूटी, मोरशिखा कस्टिक, नीलाथोथा, रांगा, काले तीतर का पित्ता, मोर का पित्ता, काला अंकोल, पीलू, सहोरा, तेजबल इनमें से

चाहो जिस एक में पारा को घोटकर गोली बनालो विशेष विधि मुझसे दर्याफ्त करो।

इति श्रीवैद्यशास्त्री गौरीशंकरजी त्रिपाठी ठाठिया

कन्नौज निवासी हाल मुकाम जिला रायपुर

सी० पी० संगृहीत रसायनविधि समाप्त।

द्रव्यं सदा तच्छरणं ममास्तु

आयुर्वेद सम्बन्धी हमारे कुछ विशिष्ट प्रकाशन

अमृतसागर–(हिन्दी में) इसमे सर्व रोगो के वर्णन और यत्न है। इमके द्वारा बिना गुरु वैद्य हो सकते है।

अनुपान दर्पण–हिन्दीटीका सहित । इसमें रस धातु बनाने की क्रिया और रोगानुसार औषधियो के अनुपान वर्णित है।

आयुर्वेद सूत्र–हिन्दीटीका सहित ।

इलाजुल गुर्बा–(हिन्दी अनुवाद)

कामरत्न–योगेश्वर नित्यानाथ प्रणीत और पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत है। और वशीकरण प्रयोग भी है।

चक्रदत्त–(चिकित्सासार संग्रह) दत्तकुलोत्पन्न चरक चतुरानन श्रीमच्चक्र पाणि विरचित। श्री० पं० जगन्नाथ शर्मा बाजपेयी आयुर्वेदाचार्य द्वारा नितान्त परिशोधित सुबोधिनी टीका सहित

पारद संहिता–हिन्दी टीका सहित। इस ग्रथ में रसविषयक सभी अवयवों का सांगोपांग वर्णन है तथा अरबी, फारसी, यूनानी, तिब्बी आदि अनेक वैद्यक ग्रथो का साराश लेकर विषय प्रतिपादन किया है। अत: पारद (पारे) को सिद्ध करनेवालो के लिए अतीव उपयोगी है।

कोकसार वैद्यक–नारायणप्रसाद मिश्रकृत तथा इच्छागिरिजीकृत काम कलासार सहित। वात्स्यायन काममूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये उक्त ग्रन्थ दो भागों में बनाया गया है। पूर्व भाग में स्त्री पुरुषो के अनेक रोगो के निवारणार्थ उत्तम साधन बताये गये है, ईक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में भी नही पाये जाने वाले साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।

गुणों की पिटारी–काशी निवासी स्वामी परमानन्द कृत–

चर्या चन्द्रोदय–हिन्दी टीका सहित

चरक संहिता–(महर्षिप्रवर चरक–ऋषि प्रणीत) मूलमात्र सस्कृत में सजिल्द

ज्वर तिमिर नाशक–क्या खूब चौबे रामप्रसादजीकृत हिन्दी टीका

डाक्टरी चिकित्सासार–पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य संग्रहीत

त्रिशती-(वैद्यवल्लभ) श्री शार्ङ्गधर रचित। संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित

नपुंसकामृतार्णव–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुसकोपयोगी नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।

पशु चिकित्सा–(वृष कल्पद्रुम) छन्दबद्ध भाषा

पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश–हिन्दी टीका सहित

बालतंत्र–हिन्दी टीका सहित

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–पञ्चम भाग–रोगो का कर्म विपाक

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–षष्ठ भाग–रोगो का चिकित्सा विभाग

बोपदेव शतक–हिन्दी टीका सहित

भैषज्य रत्नावली–हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता श्री· गोविन्ददासजीसेन हिन्दीटीकाकार–स्व० वैद्य शकरलालजी। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग है।

मदनपाल निघण्टु–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीकासहित। औषधियो के नाम व गुणदोष वर्णित है।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS